मधु संचय



महामण्डलेश्वर
श्री स्वामी भजनानन्द जी
सरस्वती का वचनामृत

प्रस्तुति - राम जीवन चौधरी

जय मातेश्वरी

मधु-संचय

पूज्य श्री १०८ महामण्डलेश्वर
स्वामी भजनानन्द सरस्वती जी महाराज के
अमृत वचनों का संकलन

प्रस्तुति

रामजीवन चौधरी, बी० एस-सी०,

प्रकाशक :

परमार्थ प्रकाशन

पो० सप्तसरोवर

हरिद्वार

संस्करण १९७४

मूल्य १८० पैसे

प्राप्ति-स्थान :

- परमार्थ आश्रम, पो० सप्तसरोवर, हरिद्वार
- परमार्थ-निकेतन, पो० स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश
- रामजीवन चौधरी,
  मीनाक्षी, १३२ विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद

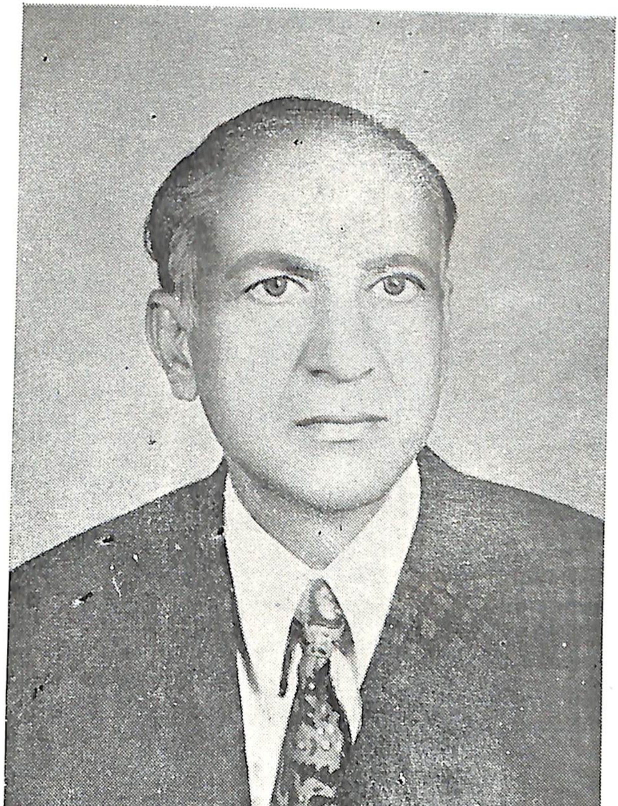
मुद्रक :

एकेडमी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद

आवरण सज्जा तथा मुद्रण :

इम्पैक्ट, इलाहाबाद

सहृदय मित्र :



श्री राधाकृष्ण अग्रवाल की पावन स्मृति में

चेतना धर्म की जागृति से भर जाती है। समाज के लिए धर्म का यही पक्ष अभीष्ट है।

पूज्य स्वामी श्रीभजनानन्द जी सरस्वती के ऐसे ही सरल अमृत वचन इस 'मधु-संचय' में संकलित हैं। उनके इन उपदेश-वचनों में विविधता है। वर्तमान भौतिक युग ने अपने चाकचिक्य में धर्म की व्याख्या और उसके प्रति आदर भावना को और भी विषम बना दिया है। आज का जमाना मध्य-युग का समाज नहीं है, जब धर्म के प्रति श्रद्धा की भावना अपने आप प्रवाहित हो रही थी, आज की स्थिति उसके बहुत विपरीत है, समाज की कठिनाइयों को भौतिक विपुलता ने बहुत बढ़ा दिया है तथा शिक्षित वर्ग अपने तर्कों से धर्म के विश्वास पर अजस्र प्रहार करता रहता है। ऐसी स्थिति में समाज का एक बहुत बड़ा भाग यह निश्चय नहीं कर पाता कि हमें करणीय क्या है? जैसे, अपने जीवन के लाभ के लिए झूठ बोलें या न बोलें; बिना अनैतिक आचरण के जब लाभ नहीं होने-वाला है तब हम कब तक नैतिकता के आचरण में टापते पड़े रहें, आदि। इन विषमताओं में यदि किसी सन्त की वाणी समाज को स्थिर एवं सम बना सकती है तो इस समय वही राष्ट्र का उद्धार कर रहा है। स्वामी भजनानन्द जी सरस्वती ऐसे ही सन्त हैं। मैंने एक वर्ष पूर्व उनकी लघु पुस्तिका 'अमृत वाणी' का अध्ययन किया था, उसमें जन-मानस को स्वच्छ करने की शक्ति ने मुझे स्वामी जी के प्रति श्रद्धावान बना दिया। उनके उपदेश-वचनों का प्रस्तुत संकलन 'मधु-संचय' भी जन-मन को धर्म का सरल दर्शन कराने में सक्षम है। मैं इन उपदेशों के संकलयिता तथा उसे प्रकाश में लानेवाले श्री रामजीवन चौधरी की प्रशंसा करता हूँ। उनका यह साधु-कार्य भी धर्म का एक अंग है। इस पुस्तक का अधिकाधिक प्रचार प्रकारान्तर से धर्म की ही सेवा है।

ईश्वरशरण डिग्री कालेज

इलाहाबाद **जयशङ्कर त्रिपाठी**

फाल्गुन कृष्ण ४, २०३०

नम्र निवेदन

प्रातः स्मरणीय श्री गुरुदेव भगवान् महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी भजनानन्द सरस्वती जी महाराज के प्रवचन परमार्थ निकेतन, स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में, प्रयाग माघ मेले में तथा अन्यत्र श्री दैवी सम्पद मंडल के उत्सवों पर होते रहते हैं, उनमें से कतिपय प्रवचनों को मेरे मित्र श्री रामजीवन जी चौधरी ने लिपिबद्ध किया है। चौधरी जी ने यह बहुत अच्छा काम किया है जो सब प्रकार से प्रशंसनीय है क्योंकि इसमें सभी के लिए हित की बात है।

भवापवर्गो भ्रमतो यद्‍भवे—
ज्जनस्य तर्ह्यच्युतसत्समागमः।
सत्संगमो यर्हि तदैव सद्‍गतौ
परावरेशे त्वयि जायते मतिः॥

श्रीमद्‍भागवत महापुराण स्कन्ध १०, अध्याय ५१/५४

महाराज मुचकुन्द भगवान् श्री कृष्णचन्द्र जी से निवेदन करते हैं, 'अपने स्वरूप में एकरस स्थित रहने वाले भगवन्! जीव अनादि काल से जन्म मृत्यु रूप संसार के चक्कर में भटक रहा है। जब उस चक्कर से छूटने का समय आता है तब उसे सत्संग प्राप्त होता है। यह निश्चय है कि जिस क्षण सत्संग प्राप्त होता है, उसी क्षण संतों के आश्रय, कार्यकारण रूप जगत् के एक

मात्र स्वामी, आपमें जीव की बुद्धि अत्यन्त दृढ़ता से लग जाती है।'

पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदास जी श्री रामचरितमानस में सत्संग की महिमा वर्णन करते हुए लिखते हैं :

बड़े भाग पाइय सत्संगा।
विनहि प्रयास होहिं भवभंगा ।।
मति कीरति गति भूति भलाई।
जब जेहिं जतन जहाँ जो पाई ।।
सो जानब सत्संग प्रभाऊ।
लोकहुँ वेद न आन उपाऊ ।।

अर्थात् बड़े भाग्य से सत्संग प्राप्त होता है। सत्संग मिलने से ८४ लाख योनियों के आवागमन का कष्ट छूट जाता है। सत्संग से बुद्धि, कीर्ति, संगति, धन, ऐश्वर्य और भलाई सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

यदि सत्संगनिरतो भविष्यसि भविष्यसि।
अथ दुर्जनसंसर्गे पतिष्यसि पतिष्यसि ।।

अर्थात् जो सज्जनों का साथ करता है वह संसार में कुछ बन जाता है और जो दुष्टों का साथ करता है वह गिरता है और अवश्य गिरता है।

इस प्रस्तुत पुस्तक के अध्ययन से घर बैठे सत्संग का लाभ प्राप्त हो जायगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है क्योंकि इसमें सत्संग-सम्मेलनों में दिये गये प्रवचनों का सार है। जिन व्यक्तियों

को महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी भजनानन्द सरस्वती जी महाराज का सत्संग लाभ प्राप्त हो चुका है, उनसे तो कुछ कहना ही नहीं है क्योंकि श्री महामण्डलेश्वर जी के प्रवचनों से जो लाभ होता है उनसे वे स्वयं परिचित हैं, लेकिन जिन्हें पूज्य महामण्डलेश्वर जी के साक्षात्कार का सौभाग्य नहीं मिला है उन्हें भी इस पुस्तक से बड़ा लाभ होगा। इस पुस्तक में जो कुछ अच्छाई है वह श्री गुरुदेव ब्रह्मलीन श्री १०८ स्वामी एक रसानन्द जी सरस्वती तथा श्री गुरुदेव ब्रह्मलीन श्री १०८ स्वामी शुकदेवानन्द जी सरस्वती महामण्डलेश्वर की है तथा जो गलतियाँ हैं वह मेरी और मेरे मित्र चौधरी जी की हैं। यह पुस्तक स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध युवा सबके पढ़ने योग्य है। पढ़ने से अनुभव होगा। अवश्य पढ़ें।

२६ जनवरी, ७४ निवेदक

३०/३१ चाहचन्द, इलाहाबाद विश्वम्भरनाथ अग्रवाल

अपनी बात

संत कृपा कब, किस पर, किस निमित्त वर्षती है यह कोई नहीं जान सकता। परम पूज्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी भजनानन्द सरस्वती जी महाराज जब सन् १९७३ के प्रयाग के माघ मेला में पधारे तो मुझे अपने समीप बुलाकर आदेश दिया कि मेरे कुछ प्रवचन टेप रिकार्ड कराकर बाद में लिखकर दे देना जिससे 'परमार्थ' पत्रिका में उनका प्रकाशन हो जाये। मुझे लगा जैसे उन्होंने मेरे मन की अभिलाषा को अपनी पावन वाणी द्वारा प्रेरित करने की कृपा की है। इस आदेश के बाद लिखे गये एवं पहले के प्रकाशित लेखों की पाण्डुलिपि प्रस्तुत कर मैंने पूज्य श्री महाराज जी को अवलोकनार्थ दी। आवश्यकतानुसार उन्होंने संशोधन किया। उनके संकेत के अनुसार भाई विश्वम्भरनाथ जी अग्रवाल से पूरी पाण्डुलिपि को अच्छी तरह सुधार देने के लिए एवं उसकी भूमिका लिख देने के लिए प्रार्थना की। समयाभाव भी होते हुए, विशेष कर अस्वस्थावस्था में, छोटे भाई की बात वे टाल न सके। दोनों ही कार्य को उन्होंने बड़े ही प्रेम एवं लगन से सम्पन्न किया, जिसके लिए धन्यवाद देकर मैं ऋण-मुक्त नहीं होना चाहता।

सहज विद्या-विनय सम्पन्न डॉ० जयशंकर जी त्रिपाठी ने

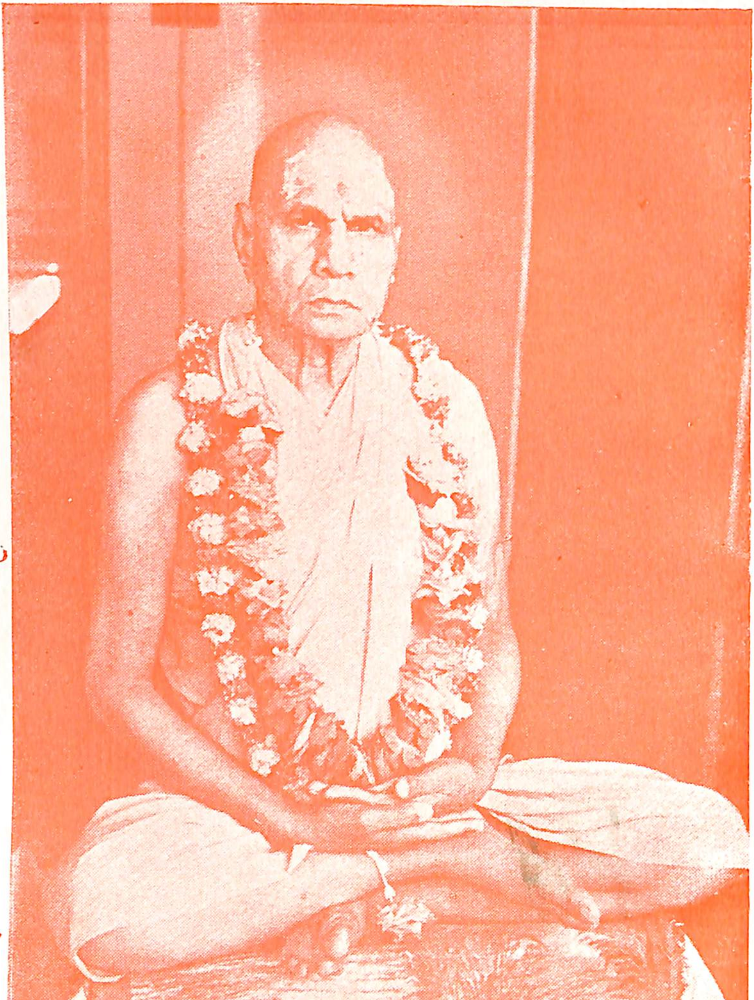
अपने स्वभाव के अनुसार इस बार भी इस पुस्तिका के प्रकाशन का पूरा कार्य-भार सम्हालकर मुझ पर बड़ी कृपा की है। अब तक हमारे द्वारा प्रस्तुत तीनों पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था उन्होंने ही की है। मैं तो उन पर अपना पूर्ण अधिकार ही मान बैठा हूँ। वे भी इसको अपना ही कार्य समझकर करते हैं।

इतना सब होते हुए भी पुस्तिका में लेखन और छपाई की त्रुटियाँ स्वाभाविक हो सकती हैं। सुधी पाठक इन त्रुटियों को क्षमा करते हुए, पूज्य महामण्डलेश्वर जी द्वारा दिए हुए पथ-प्रदर्शक उपदेशों का चिन्तन करेंगे तथा लाभ उठायेंगे।

१३ फरवरी, ७४
'मीनाक्षी'
१३२ विवेकानन्द मार्ग, प्रयाग रामजीवन चौधरी

क्रमसूची

पूज्य चरण :



महामण्डलेश्वर श्री १०८ श्री स्वामी भजनानन्दजी सरस्वती

निःस्पृहता और शान्ति

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः सशान्तिमधिगच्छति ॥

जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित और अहंकाररहित, स्पृहारहित हुआ बर्तता है, वह शान्ति को प्राप्त होता है।

यह निःस्पृह शब्द बड़े महत्व का है। जो निःस्पृह अर्थात त्यागी होता है उसकी कीमत बढ़ती है। मैं दुनिया से पूँछता हूँ कि काश्तकार अढ़ाई सेर अच्छे गेहूँ कार्तिक के महीने में जमीन में फेंक आवे तो बढेंगे या घटेंगे? कार्तिक के महीने में खेत जोता, जोतने के बाद उसमें २-१/२ सेर गेहूँ डाल आया तो उसको २-१/२ सेर ही मिलेंगे या अधिक मिलेंगे? मैंने ऐसी जमीनें भी देखी हैं जहाँ एक एक बीघे में पचीस-पचीस मन गेहूँ होता है। तो उन २-१/२ सेर गेहूँ के बदले कई गुना ज्यादा गेहूँ मिलेंगे। हमारे ब्रह्मलीन महामण्डलेश्वर स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज एक बात और कहा करते थे—डलिया में आलू रखे रहेंगे तो घटेंगे, क्योंकि वे सड़ जायेंगे। और वे ही आलू यदि जमीन में बो दिये जायेंगे तो भी सड़ जायेंगे लेकिन बढेंगे। धन की तीन गति होती है दान, भोग और नाश। अपनी जो भी सम्पत्ति आप परहित में लगा देंगे वे खेत में बोये हुए आलू की तरह बढ़ेंगे और जो धन आप पास में रक्खे

रहेंगे वह डलिया में रखे आलू की तरह तीसरी गति नाश को प्राप्त होगा। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस में लिखा है—

सो धन धन्य प्रथम गति जाकी।
धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी॥

स्वामी जी की कही बातें हम इसलिए याद दिलाते रहते हैं कि आप भूल न जाँय। संतों का काम है भूले को याद दिलाना।

हनुमान जामवन्त एवं सब बानर बैठे थे समुद्र किनारे एवं समुद्र पार जाने की मंत्रणा हो रही थी। किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ सम्मति दी, सब अपनी अपनी बात कह रहे थे। समुद्र के पार जाने में सभी ने सन्देह प्रकट किया। जामवन्त ने हनुमान जी से कहा :—

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना।
का चुप साधि रहेउ बलवाना॥
पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक विग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहि होइ तात तुम पाहीं॥
राम काज लगि तव अवतारा।

—राम० च० मानस किष्किन्धा २९।२-३

जामवन्त के इतना कहने पर क्या हुआ ? हनुमान जी पर्वताकार हो गये—

सुनतहि भयउ पर्वताकारा ।।

और हनुमान जी ने बार-बार सिंहनाद करकर कहा—मैं इस खारे समुद्र को खेल ही में लाँघ सकता हूँ।

आजकल लोग कहते हैं अमुक काम बड़ा कठिन है, बड़ा कठिन है—हम भी मानते हैं कि कठिन है, लेकिन मानव जीवन पाकर इन समस्याओं का हल नहीं निकाल सके तो फिर कब हल निकलेगा ? मनुष्य शरीर के अलावा, अन्य चौरासी लाख योनियों में क्या इस समस्या का हल होगा ? नहीं।

ब्रह्मलीन स्वामी, स्वामी शुकदेवानन्द जी कहते थे कि डलिया में भी आलू सड़ेंगे एवं जमीन में भी आलू सड़ेंगे। डलिया में आलू सड़ेंगे तो सब नष्ट हो जायेंगे, लेकिन जमीन में सड़ने से एक के अनेक हो जायेंगे। मनुष्य शरीर पाकर आहार में, आलस्य में, निद्रा में, मैथुन में समय खो दिया तो डलिया में आलू सड़ने की तरह हुआ। यदि जीवन को दूसरों के हित में लगा दिया, परोपकार में लगा दिया, भजन में लगा दिया तो तब भी शरीर नष्ट होगा लेकिन इस दशा में शरीर न रहने पर भी भगवान के यहाँ जगह मिलेगी।

'निःस्पृह' शब्द के बारे में और भी विचार करें। हम परमात्मा से मिलना तो चाहते हैं लेकिन संसार को साथ रख कर। तो क्या परमात्मा की प्राप्ति हो सकेगी ? नहीं। अगर परमात्मा को पाना चाहते हो तो जगत को मन से छोड़ना होगा।

दूसरा दृष्टांत सुनो। समुद्र में जो मछली रहती है उसके पास कितना जल रहता है ? अथाह। कोई नहीं बता सकता

कितना जल है। इसी प्रकार इस जीव के पास कितना आनन्द है कोई नहीं बता सकता।

आनन्द सिन्धु मध्य तव बासा।
बिनु जाने कत मरत पियासा ॥

मछली के आँख के पास, जिह्वा के पास, नाक के पास, हाथ के पास, पेट के पास अर्थात् उसके चारों तरफ जल ही जल है। ऐसे ही जीव के आस-पास आनन्द रूपी समुद्र भरा है।

मनुष्य का पतन होता है या तो लोभ से या भय से। यदि लोभी है तो वह भक्त नहीं हो सकता, यदि उसको भय है तो वह भक्त नहीं हो सकता। यदि लोभ भी है और भय भी है तो ऐसा व्यक्ति ज्ञानी भी नहीं हो सकता। क्योंकि—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ (गीता)

ज्ञानी का स्वरूप शस्त्र से नहीं कट सकता। सिनेमा के पर्दे पर कौरव पाण्डवों की लड़ाई हुई। दिखाई पड़ा कि तलवारें चल रही हैं। लेकिन क्या उससे सिनेमा का पर्दा कटेगा ? नहीं ! अगर परदा नहीं तो लड़ाई का दृश्य दिखाई न दे। ऐसे ही चेतन आत्मा के परदे के बिना संसार का चित्र दिखाई नहीं पड़ता, लेकिन तो भी आत्मा निःस्पृह रहती है।

यह जो भ्रम है कि चेतन आत्मा में संसार है, यह कैसे दूर हो ? सिनेमा के परदे पर जो दृश्य दिखाई देता है उसकी रोशनी जहाँ से आकर दृश्य बनती है यदि उधर घूम कर देखा जाय तो

असलियत मालूम हो जाय। इसलिए जिधर दृश्य दिखता है उधर करो पीठ, और जिधर से दृश्य आता है उधर करो मुख तो तत्व का पता लग जायगा।

हमने ऐसे गाँव देखे हैं जहाँ एक-एक गाय के एक-एक मन दूध होता है। जहाँ इतना दूध होता है, वहाँ की माताएँ भी बलवान होती हैं। यदि एक चाँटा कस कर मार दें तो छट्टी का दूध याद आ जाय। तो वहाँ की माताएँ दूध की दही जमाकर माठा फेरती हैं। माठा फेरने में असंख्य छीटे पड़ते हैं। एक माठा फेरने वाली माता का लड़का इतने में आता है और कहता है, माँ मुझे भूख लगी है। क्या माठा फेरने से उड़े हुए उन असंख्य छीटों से उस लड़के की क्षुधा मिट जायेगी? नहीं। बालक की भूख तो माता के दूध से मिटेगी। इसका मतलब क्या है? जीव रूपी बालक की क्षुधा ब्रह्माण्डों के स्वामी आनन्द सिन्धु भगवान ही मिटा सकते हैं, अनन्त ब्रह्माण्ड नहीं।

एक बात हमने ऊपर कही। मनुष्य का पतन या तो लोभ से होगा या भय से होगा। भगवान के भक्त को लोभ कैसा? जो लड़का अपने पहले पिता को छोड़ कर दूसरे पिता के गोद में जाता है तो उसको यदि पहिले पिता की सम्पत्ति का लोभ होगा तो क्या वह दूसरे पिता के गोद जायगा? कदापि नहीं। इसलिए भक्त को यदि सांसारिक सम्पत्ति का लोभ है तो वह भगवान का भक्त नहीं हो सकता।

लड़के लड़की की कुण्डली मिलाई जाती है तो ३६ गुणों में १८ गुण मिल जाय तो ठीक समझा जाता है। यदि १८ न मिलें

तो वह सम्बन्ध नहीं होता। आजकल कुण्डली नहीं मिलाई जाती चमड़ा मिलाया जाता है।

माया एवं जीव का एक भी गुण नहीं मिलता है। लेकिन परमात्मा एवं जीव के सभी गुण मिलते हैं। लड़की का जहाँ जन्म होता है वह उसका पीहर या मैका कहलाता है। और जहाँ लड़कियों का सम्बन्ध होता है वह ससुराल कहलाता है। लड़की कहती है 'मैका है' अर्थात् माया का है। लड़की को यदि उनका स्वामी आशीर्वाद दे और कहे कि तुम अपने घर में जाकर रहो। तो उसका घर मैका नहीं ससुराल होगा। मैका तो माया का है उसको छोड़ना होता है और जहाँ पति है वही उसका घर होता है। इसी तरह साधक रूपी जो लड़की है उसका माया का घर अपना नहीं है, बल्कि परमात्मा रूपी पति का घर ही उसका अपना घर है।

समुद्र में जो मछली रहती है उसके चारों तरफ अथाह जल रहता है लेकिन तो भी वह प्यासी रहती है। हमारे पूज्य स्वामी हीरानन्द जी एक कथा कहा करते थे। उनका हमारा साथ अनेक वर्षों तक रहा है। आप लोगों ने भी उनके दर्शन किये होंगे। एक लड़की तालाब में स्नान करने गयी। उसके गले में एक हीरे मोती का हार था, उसको स्नान करने के पूर्व एक खूँटे पर टाँग दिया। टाँग कर तालाब में स्नान किया। स्नान करके फिर हार पहनना भूल गई और घर लौट गयी। घर जाकर गले में हाथ गया तो देखा गले में हार नहीं है। पिता के पास जाकर रोने लगी। पिता ने कहा, अब क्या हो सकता है ? खैर, समाचार पत्रों

में विज्ञापन निकलवा दिया कि जो कोई हीरा मोती का हार ढूँढ़कर लायेगा उसको एक लाख रुपया इनाम मिलेगा।

इधर एक कौवे ने चमकते हुए हार को देखा तो चोंच में दबाकर उड़ गया। उड़ते-उड़ते एक पेड़ पर बैठा तो एक डाल पर हार टाँग दिया और उड़ गया। जिस पेड़ पर हार टँगा उसके चारों तरफ वर्षा का पानी खूब जमा था, एक मनुष्य इतनी ज्यादा पुरस्कार की घोषणा सुनकर हार ढूँढ़ने निकला। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वह उस पेड़ के पास पहुँचा और देखा पानी में हार पड़ा हुआ है। उस समय पानी स्थिर था इसलिए हार दिखाई पड़ता था। हार देखकर उसको बड़ा आनन्द मिला, कि हार लेकर देने से एक लाख पुरस्कार मिलेगा।

वह पानी में उतरा हार निकालने के लिए लेकिन पानी में उतरते ही पानी हिलने लगा और हार अदृश्य हो गया। लाचार बाहर आ गया। बाहर आते ही पानी फिर स्थिर हो गया हार फिर दिखाई पड़ने लगा। दोबारा पानी में उतरा हार लेने के लिए, लेकिन हार जल के चंचल होने से पुनः गायब हो गया। बाहर निकला। इस तरह पानी के बाहर, पानी के भीतर का क्रम चलता रहा।

इतने में एक महात्मा जो कि उनकी इस हरकत को देख रहे थे वहाँ आये और पूँछा क्या बात है? पहले तो उस व्यक्ति ने सोचा कहीं बाबा ही हार न ले जाँय, इसलिए टाल-मटोल की। लेकिन बार-बार पूँछने पर कहा कि पानी में जो हार है, वह मिल जाय तो उसको एक लाख रुपयों की प्राप्ति होगी।

बाबा ने कहा हम युक्ति बता सकते हैं जिससे तुमको हार मिल जाय। व्यक्ति ने कहा बताइये। बाबा बोले जहाँ तुम जल में हार देख रहे हो, वास्तव में वहाँ वह है नहीं। हार टंगा है ऊपर पेड़ की डाल में। व्यक्ति ने ऊपर देखा तो उसे असीम आनन्द मिला।

इसी तरह मनुष्य आनन्द ढूँढ़ रहा है संसार में, जहाँ वास्तव में आनन्द का अभाव है। आनन्द के लिए गर्दन घुमानी पड़ेगी आनन्द सिंधु परमात्मा की तरफ।

माघ मेला कैम्प, प्रयाग १-२-७३

उत्तिष्ठत, जाग्रत

एक सज्जन कोट एवं पतलून पहने हुए थे। वे लघुशंका करने गये। लेकिन उनकी कोट की बटन पतलून में लगी हुई थी एवं पतलून की बटन कोट में लगी हुई थी। इस कारण उनकी कमर झुक गई थी जिससे वे लघुशंका कर नहीं पा रहे थे। कमर लचक जाने से उनके कमर में दर्द होने लगा तब वह डाक्टर के पास गये। डाक्टर ने कहा पहले हम रोग का निदान करेंगे तब दवा देंगे। रोग के निदान की फीस ३१) अलग लेंगे। रोगी ने देना स्वीकार कर लिया।

डाक्टर ने कहा यह वायु का दर्द है, लाओ निदान करने के ३१)। रोगी ने दे दिया और पूँछा यह दर्द जाय कैसे ? डाक्टर ने कहा—दर्द चला जायेगा लेकिन इसके लिए तुमको आँखे बंद करनी पड़ेगी। जब रोगी ने आँखे बंद की तो कोट का बटन कोट में लगा दिया, पतलून का बटन पतलून में लगा दिया। अब बताओ यह गलती उस सज्जन की है या डाक्टर की ? यह दृष्टान्त है। हमारे शास्त्र यह कहते हैं कि—

ईश्वर अंश जीव अविनाशी
चेतन अमल सहज सुख राशी।
राम सच्चिदानन्द दिनेशा
नहिं तहं मोह निशा लवलेशा॥

जितने लक्षण ईश्वर में हैं वे सब जीव में हैं।

राम सत्-चित्-आनन्द स्वरूप हैं तो जीव भी सत्-चित्-आनन्द स्वरूप है। जीव सत् कैसे हुआ ? स्वप्न तुमने देखा और जाग गये। तो स्वप्न का देखने वाला ही तो जाग्रतावस्था में है। कोई दूसरा होता तो स्वप्न की बात कैसे बताता ? तो जीव सत् हुआ कि नहीं ? जो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति में 'एक रस बना रहे वह सत् है।

अब जीव चेतन कैसे हुआ इस पर विचार करो। जब तक इस शरीर में जीव है, इसमें चेतना है, तब तक यह चलता-फिरता है, इसकी इन्द्रियाँ काम करती हैं। चेतनता के कारण ही पैर चलते हैं, हाथ काम करते हैं, आँखे देखती हैं, कान सुनती हैं, नाक सूँघता हैं। जीव या चेतन इस शरीर से निकल जाय, उसके बाद यह शरीर जब पसरा हुआ रहे तो उसके मुँह में रस-गुल्ला डालकर पूँछा जाय कि रसगुल्ला कैसा लग रहा है ? क्या वह बताएगा कि रसगुल्ला कैसा है ? अच्छा उसके कान के पास ट्राँज़िस्टर खोल दो तो क्या वह सुनेगा ? इससे यह प्रमाणित हुआ कि जीव चेतन भी है और सत् भी है।

अब आगे विचार किया जाय। जब सो जाते हो, सुषुप्ति में हो जाते हो, तो आनन्द होता है कि नहीं ? तो जीव सत् भी हुआ, चेतन भी हुआ एवं आनन्द स्वरूप भी हुआ।

१० तोला सोने के एक टुकड़े को कसौटी पर कसो एवं १ तोले के सोने के टुकड़े को कसौटी पर कसो तो जो कस दस तोले के टुकड़े में आयेगा वही कस एक तोले के टुकड़े में आयेगा। तात्पर्य यह है कि दोनों टुकड़ों में कस तो एक ही है लेकिन कीमत में अंतर

है। यही बात परमात्मा एवं जीव की है, इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने श्री रामचरित मानस में कहा है—

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुख राशी।।

एक बाजीगर रुपया बनाता है, बजाता है, आपको दिखाता है। बाजीगर रुपया बना सकता होता तो दर्शकों से पैसा क्यों माँगता ? यह बाजीकर का केवल तमाशा होता है। एक तमाशा ऐसा भी वह दिखाता है कि एक लड़के को जमीन पर लिटा दिया और कह दिया इसकी गर्दन काटेंगे। तमाशा तो दिखाता है, गर्दन भी काटता है लेकिन सचमुच गर्दन कटती नहीं है। रुपया भी जो बनाकर दिखाता है वह सच्चा रुपया नहीं होता।

बाजीगर के खेल एवं तमाशा को उसका जमूरा जानता है। भगवान की माया को भी भक्त रूपी जमूरा जानता है। वह जमूरा कौन हो सकता है ? जो अपनी जीविका को एवं जीव को भगवान को अर्पण कर देता है। ऐसा भक्त था निषाद। उसकी जीविका क्या थी ? नाव खेना। वह कहता है—

कारन कवन भरतु बन जाहीं।
है कुछ कपट भाव मन माहीं।।
अस विचारि गुह ग्याति सन,
कहेउ सजग सब होहु।
हथवाँसहु बोरहु तरनि,
कीजिअ घाटारोहु।।

नावों को हाथ में (कब्जे में) कर लो फिर उन्हे डुबा दो और घाट के मार्ग को भरत के लिए रोक दो। इस तरह निषाद राम काज के लिए जीविका भी देने को तैयार हो गया। आगे कहता है—

समर मरनु पुनि सुर सरि तीरा।
राम काजु छनभंगु शरीरा॥
भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू।
बड़े भाग असि पाइअ मीचू॥

—रामचरितमानस अयोध्या १८६।२

युद्ध में मरण, फिर गंगा जी का तट, श्री राम जी का काम और क्षणभंगुर शरीर, और मैं नीच सेवक, बड़े भाग से ऐसी मृत्यु मिलती है कि श्रीराम के भाई राजा भरत के हाथ से मरना हो जाय।

राम के कार्य के लिये मर जाय तो बड़े भाग्य हैं कि नहीं? मोटर के लिए मरो, स्त्री के लिए मरो, मकान के लिए मरो, धन के लिए मरो, तो ऐसी मृत्यु भाग्य की बात नहीं हो सकती।

दशरथ जी के जीवन से सीखना चाहिए, राम के कार्य के लिए कैसे प्राण दिये जाते हैं। महाराज दशरथ जी के लिए गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं:—

जिअन मरन फलु दशरथ पावा।
अंड अनेक अमल जसु छावा॥
जिअत राम बिधु बदनु निहारा।
राम विरह करि मरनु संवारा॥

—रामचरितमानस अयोध्या० १५५।१

जीने एवं मरने का फल तो दशरथ ने ही पाया, जिनका निर्मल यश अनेकों ब्रह्माण्डों में छा गया। जीते जी तो श्री राम के चन्द्रमा के समान मुख को देखा और श्रीराम के विरह को निमित्त बनाकर अपना मरण सुधार लिया।

भगवान के असली तत्व को वह समझ पायेगा जो अपने को भगवान के आश्रित कर लेता है। उदाहरण से यह बात समझ में आयेगी।

जो लड़का किसी की गोद हो जाता है तो पहिले गोद लेने वाला लिखा-पढ़ी करता है कि हमारे पास जो कुछ धन सम्पत्ति है वह सब इस लड़के की हो जायगी। इस कारण जो लड़का अपने पहिले पिता को छोड़कर दूसरे पिता के गोद जाता है तो उसकी सारी सम्पत्ति का मालिक हो जाता है। ठीक इसी प्रकार से जो भगवान के आश्रित हो जाता है वह भगवान के रहस्य को समझ जाता है।

सपने होइ भिखारि नृप, रंक नाकपति होइ।
जागे हानि न लाभ कछु, तिमि प्रपंच जिय जोइ॥

एक कथा आपने अनेक बार सुनी होगी। अष्टावक्र ने अपनी माता से पूछा कि हमारे पिता कहाँ हैं? माता ने कहा कि राजा जनक के जेल में हैं। अष्टावक्र राजा जनक के दरबार का पता लगाकर वहाँ पहुँचे। दरबार में अनेक विद्वान, वेदान्ताचार्य, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य बैठे थे। अष्टावक्र जी जब राजा जनक के दरबार में पहुँचे तो उनके आठ जगह से टेढ़े अंग को देखकर सब

हँसने लगे। उन सबको हँसते देखकर अष्टावक्र भी हँसने लगे। वहाँ सभा के संयोजक ने अष्टावक्र से पूँछा कि आप किस कारण हँसे ? अष्टावक्र ने पूँछा कि पंडित लोग क्यों हँसे ? तब पंड़ितों में से किसी ने कहा—तुम्हारे जो आठों अंग टेढ़े हैं उनको देखकर हम लोग हंसे। अष्टावक्र ने कहा कि हमने सुना था कि यहाँ बड़े-बड़े पंडित विद्वानों की सभा है, लेकिन यहाँ तो सब चमार हैं, यह चमारों की सभा है क्योंकि यहाँ ज्ञान की परीक्षा नहीं किन्तु चमड़े की परीक्षा की जाती है।

अष्टावक्र ने पंडितों को, विद्वानों को चमार बना दिया। कुछ लोग देखते हैं कि हमारे गुरु के पास कितनी उपाधियाँ हैं, कितने आश्रम हैं, इससे गुरु की महानता नापते हैं। लेकिन संतों के भीतर ज्ञान कितना है यह देखना चाहिए।

ब्राह्मण की विद्वत्ता से बड़प्पन है, क्षत्रिय की राज्य से बड़प्पन है, वैश्य की सम्पत्ति से बड़प्पन है। तत्वदर्शी सबसे बड़ा होता है।

रामचरितमानस में लिखा है :—

सोचिय विप्र जो बेद विहीना।
तजि निज धरम विषय लवलीना॥
सोचिय नृपति जो नीति न जाना।
जेहि प्रजा प्रिय न प्रान समाना॥
सोचिय वयसु कृपन धनवानू।
जो न अतिथि सिव भगति सुजानू॥

सोचिय सूद्र विप्र अवमानी।
मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी॥
सोचिय पुनि पतिवंचक नारी।
कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी॥
सोचिय बटु निज व्रत परिहरई।
जो नहिं गुर आयसु अनुसरई॥
सोचिय गृही जो मोहबस, करइ करम पथ त्याग।
सोचिय जती प्रपंच रत, बिगत बिवेक बिराग॥
बैखानस सोइ सोचै जोगू।
तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू॥
सोचिय पिसुन अकारन क्रोधी।
जननि जनक गुर बन्धु बिरोधी॥
सब बिधि सोचिय पर अपकारी।
निज तनु पोषक निरदय भारी॥
सोचनीय सबहीं बिधि सोई।
जो न छाड़ि छल हरि जन होई।

ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, सन्यासी, वानप्रस्थी कोई हो, लेकिन छल छोड़े बिना राम की भक्ति नहीं कर सकते।

एक राजा है, रात में सोये-सोये स्वप्न देखता है कि वन में पैदल चल रहे हैं, घसियारे का जीवन यापन कर रहे हैं, पैर में काँटा चुभ गया। काँटे को हिलाकर निकालने लगे तो आँख खुल गई। अब बताओ राजा सत्य है या घसियारा सत्य है।

विचार करो जो स्वप्न देखा जाता है वह जगकर देखा जाता है या सो कर ? स्वप्न में सोकर कैसे स्वप्न देखोगे ? कोई वस्तु देखी जाती है तो जागकर देखी जाती है। इसलिए स्वप्न देखा जाता है स्वप्नावस्था में जगकर। इस स्थिति में जाग्रत में तो तुम सो रहे हो लेकिन स्वप्न में जाग रहे हो। तभी तो स्वप्न में तरह-तरह की घटनाएं तरह-तरह के दृश्य दिखाई पड़ते हैं। जाग्रत अवस्था में आँखें खुली रहती हैं, लेकिन स्वप्नावस्था के समय आँखें बंद रहती हैं।

इस बात का निचोड़ यह है कि स्वप्न में तो तुम जग रहे हो, लेकिन यथार्थ में सो रहे हो। इसी तरह इस संसार में भी तुम जग रहे हो लेकिन यथार्थ में सो रहे हो। जागना किसको कहते हैं।

मोहनिशा जग सोवनि हारा।
देखहि स्वप्न अनेक प्रकारा॥
यहि जग यामिनी जागहि योगी।
परमारथी प्रपंच वियोगी॥

परमार्थी जगता है प्रपंची सोता है। जब जानकारी हो जायेगी, तत्व को जान जाओगे तब जग जाओगे।

सपने होइ भिखारि नृप, रंक नाकपति होइ।
आगे हानि न लाभ कछु, तिमि प्रपंच जग जोइ।

स्वप्नावस्था में स्वप्न देखते हो लेकिन यथार्थ में सोते हो। यह बात अब समझ में आ गयी होगी—

जब राजा जनक जैसे ज्ञानी चक्कर में पड़ गये, जो हम लोगों के गुरुओं के गुरु हैं, तो यह बात समझने में देर जरूर लगती है। यह बात एक दिन में नहीं समझ में आती। कोर्ट में मुकदमा लग जाते हैं, बीसों वर्ष बीत जाते हैं, फैसला नहीं होता। मुकदमा करने वाला मर जाता है, उसका उत्तराधिकारी लड़का मर जाता है तो भी फैसला नहीं होता। तब तत्व की बात एक दिन में कैसे समझ में आ सकती है।

तत्व की बात यह है कि कैसे स्वप्नावस्था में जगते हुए यथार्थ में सो रहे हो, उसी तरह अभी जागते हुए भी यथार्थ में सो रहे हो। तब कैसे जगा जा सकता है? गोस्वामी तुलसीदास रामचरित मानस में लिखते हैं :—

जानिय तबहिं जीव जग जागा।
जब सब विषय विलास विरागा ।।

नीम कड़ुआ होता है, लेकिन साँप काटने पर वही नीम मीठा लगने लगता है। सर्प का विष उतारने के लिए तब तक उपचार होता रहता है, इन्जक्शन लगते रहते हैं जब तक नीम कड़वी न लगने लगे। किसी ने पूँछा कि कब तक सन्तो के साथ सत्संग करते रहना चाहिए? उत्तर मिला कि तब तक महात्माओं के सत्संग में रहो जब तक विषय रूपी नीम कड़ई न लगने लगे।

स्वायंभू मनु ने बहुत काल तक राज्य किया और संसार के विषय भोगों में लगे रहे तब एक दिन उनके हृदय में वैराग्य

उत्पन्न हुआ और बहुत दुःख लगा कि यह दुर्लभ मनुष्य जन्म बिना भगवान की भक्ति के व्यतीत हुआ चाहता है। गोस्वामी तुलसीदास ने श्री रामचरितमानस में लिखा :—

होइ न विषय विराग, भवन वसत भा चौथपन।
हृदय बहुत दुख लाग जनम गयो हरिभगति बिनु॥
बरबस राज सुतहिं नृप दीन्हा।
नारि समेत गवन वन कीन्हा॥

—रामचरितमानस बालकाण्ड १४२

इस तत्व को समझने में थोड़ा समय लगता है। जब दूसरे का प्राण निकलता है, तब उसके कष्ट को देखकर लोग यह कह देते हैं यह तो संसार का काम ही है। लेकिन जब खुद का प्राण निकलने लगता है तब मालूम पड़ता है कि प्राण निकलने में कितना कष्ट होता है।

तात्पर्य हमारे कहने का है कि जब सोते में स्वप्न देखते हो तो उस अवस्था में जागकर देखते हो। हे मनुष्यों! तुम जन्म जन्मान्तर से अज्ञान निद्रा में सो रहे हो। परमात्मा की दया से तुम्हें यह दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्यधारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

शीघ्र सावधान हो जाओ। श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उनके सद् उपदेशों से **अज्ञान** रूपी निद्रा से जागो और परमात्मा का रहस्य समझ लो। परमात्मा का तत्व बड़ा गहन है। तीक्ष्ण

की हुई छुरे की दुस्तर तेज धारा पर चलने के समान दुर्गम है। ऐसे दुस्तर मार्ग से सुगमतापूर्वक पार होने का सरल उपाय अनुभवी महापुरुष ही बता सकते हैं। (इसलिए उठो सावधान हो जाओ और अज्ञान रूपी निद्रा से जागो। देर न करो।) समय से से सब कुछ मिल सकता है लेकिन सब कुछ देने पर भी समय नहीं मिलता।

माघ मेला कैम्प, प्रयाग १-२-७३

दुर्लभ मनुष्य शरीर

डाक्टर लोग जब किसी के खून की जाँच करते हैं तो बताते हैं कि इसमें मलेरिया के कीड़े हैं, या टायफायड के कीड़े हैं, या टीबी के कीड़े हैं। कानपुर में हमारे एक मित्र हैं जिनका नाम है देवीचरण। उनके यहाँ एक शीशा लगा है, जिसके सामने हम खड़े हुए तो हमारा चेहरा बहुत बड़ा दिखाई पड़ा। इसी तरह काँच में भी खून के अदृश्य कीड़े बड़े होकर दिखलाई देते हैं।

मैंने डाक्टर से पूँछा कि आप शीशी में खून की जाँच के लिए जितना खून लेते हैं, उसमें कितने कीड़े हैं हमको बताइए। दो हैं, चार हैं, एक सौ हैं या कितने हैं। डाक्टर ने कहा संख्या तो नहीं बता सकते लेकिन हैं अनेक। यह उस समय की बात है जब हमारे ही शरीर से जाँच के लिए खून लिया गया था। हमने कहा ठीक-ठीक संख्या नहीं बता सकते तो अनुमान बता दो। ज्यादा से ज्यादा तीन मासे खून लिया था, हमारे अनुमान से उसमें २५० कीड़ों से कम कीड़े न होंगे, जैसा कि खुर्दबीन से देखकर हमने अंदाज लगाया था।

तीन मासे खून में २५० कीड़े हैं तो पूरे मनुष्य के शरीर के खून में कितने कीड़े हो सकते हैं ? मनुष्य के शरीर में अनुमान से एक सेर खून समझ लिया जाय। मैं सेर के जमाने का आदमी हूँ इसलिए सेर की बातें करता हूँ, किलोग्राम की बात नहीं करता।

३ मासे खून में २५० कीड़े हों तो एक सेर खून में कितने कीड़े होंगे। करीब अस्सी हजार कीड़े होंगे। आज ४ अरब की आबादी संसार की बताई जाती है तो चार अरब आदमियों में कितना खून निकलेगा एवं उसमें कितने कीड़े होंगे? असंख्य कीड़े होंगे।

मैं इसलिए ऐसी चर्चा यह बताने के लिए कह रहा हूँ कि मानव शरीर दुर्लभ है। भगवान शंकराचार्य ने विवेक चूड़ामणि में एक श्लोक लिखा है :

दुर्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रह हेतुकम् ।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः ॥

भगवान की कृपा से ही मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व और महान् पुरुषों का संग मिलता है—एवं ये तीन ही दुर्लभ हैं। मनुष्य शरीर नहीं कहा है, मनुष्यत्व कहा है। मनुष्यत्व किसको कहा गया है, इस पर विचार करना है लेकिन पहले दुर्लभ शब्द पर विचार कर लिया जाय। यदि चार अरब आबादी है तो उसमें खून अनुमान से ४ अरब सेर निकलेगा। और इतने खून में कितने कीड़े निकलेंगे कोई अनुमान-हिसाब नहीं लगा सकता। अब दुनिया में जितने प्राणी हैं, सब में कितना खून है एवं उस खून में कितने कीड़े होंगे इसका हिसाब लगाना तो असम्भव ही है। अब समझ में आया मनुष्य शरीर दुर्लभ क्यों है।

हमारे ब्रह्मलीन स्वामी शुकदेवानन्द जी कहा करते थे कि ऐसी कोई मशीन बताओ जिसमें रोटी, दाल, पापड़, रबड़ी आदि डाल दी जाय और खून बन जाय। विश्वविद्यालयों में पत्र डालकर पता

लगाओ कि ऐसी कोई मशीन है या नहीं ? यदि यहाँ पता न लगे तो अमेरिका की युनिवर्सिटी में चिट्ठी डालकर पूँछ लो। जर्मन, जापान, रशिया, ब्रिटेन कहीं भी पूँछो।

अच्छा, यदि नहीं है तो पूँछो कि तुम्हारे यहाँ बड़े-बड़े रिसर्च हो रहे हैं तो ऐसी कोई मशीन बनने की संभावना है ? तब सिद्ध क्या होता है—गोस्वामी तुलसीदास ने श्री रामचरित मानस में लिखा :—

सब मम प्रिय सब मम उपजाए।
सबसे अधिक मनुज मोहि भाए॥

भगवत् रचित यह सृष्टि है। इस सृष्टि के बारे में एक कवि ने लिखा है—

बीस लाख स्थावर जानो।
नौ लाख तुम जलचर मानो॥
ग्यारह लाख कृमि कवि गाए,
पक्षी गण दश लाख बताए॥
तीस लाख पशु जानो भाई,
चार लाख बानर समुदाई॥
यह चौरासी जब कटि जावे,
तब मानुष तन को पावे॥

इस तरह उन्होंने अपनी कविता में चौरासी लाख योनियाँ गिनाई हैं। मनुष्य योनि इससे पृथक है।

पुराण में एक कथा आती है कि एक गदहा जा रहा था तो लक्ष्मी माता ने भगवान से पूँछा कि यह कौन जा रहा है तो भगवान ने बताया कि चौदह बार इन्द्र बनकर अब यह गदहा बना है। तो इन्द्र बनने से क्या लाभ ? तात्पर्य यह कि इन्द्र पद भी नाशवान है। भगवान से इन्द्र सदृश सुख माँगना भी बुद्धिमानी नहीं है। भगवान से अविनाशी पद की ही याचना करना चाहिए।

ब्रह्मा के एक दिन में चौदह इन्द्र मरते हैं। एक हजार बार सतयुग, एक हजार बार त्रेता, एक हजार बार द्वापर, एक हजार बार कलियुग। ऐसे-ऐसे हजारों वर्ष के युग उसमें कितने दिन होते हैं, और ब्रह्मा के एक दिन में चौदह इन्द्र मरते हैं। तो इतने युगों में कितने इन्द्र मरेंगे ?

जहाँ कोई महात्मा तपस्या करने बैठे कि इन्द्र को जलन होने लगती है कि मेरा सिंहासन छीन न ले। इस विचार से समझ लें कि मनुष्य शरीर जो मिला है वह कितना दुर्लभ है। आज हम इस पर विचार नहीं करते किन्तु खाने-पीने मौज उड़ाने में लगे रहते हैं लेकिन जब अंतिम समय आता है तब यह जीव पछताता है और रोता है किन्तु उस समय का पछताना कुछ काम देता नहीं।

अपने व्याख्यानों में मैं एक बात कहा करता हूँ। एक मनुष्य ने कहा कि खाने को रोटी नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, रहने को मकान नहीं है, कितनी तंगी है। कितनी गरीबी है। दूसरे ने कहा भाई जैसा तुम्हारे प्रारब्ध में है वह तुम्हें ही भोगना पड़ेगा। इतने में एक महात्मा आ गये। महात्मा से भी उस पहले वाले व्यक्ति ने वही बात दोहराई, तो महात्मा ने कहा भाई तुम बहुत बड़े धनवान

हो। उसने कहा कि महराज मैं इतना गरीब हूँ तो धनवान कैसे हुआ ?

महात्मा माने बाबा। जो बाबा हों वे इस बात को समझ लें। भजनानन्द बाबा नहीं हैं।

जिनके लड़का के लड़का हो जाय वे बाबा हो गए। यहाँ पर उपस्थित श्रोताओं में बहुत-सी माताएँ दादी होंगी, बहुत से भाई बाबा होंगे।

जिसका किसी से न हो दावा
वह हुआ बाबा।

जो बाबा होकर औरों पर दावा करता है तो वह बाबा नहीं हो सकता। यदि दावा करता है तो वह या तो साँप बनेगा, या कुत्ता बनेगा इसलिए जब बाबा बन गये तो दावा करना छोड़ दो।

महाराज मनु ने विचार किया :—

होय न विषय विराग भवन बसत भा चौथपन।
हृदय बहुत दुःख लाग जनम गयो हरि भगति बिनु॥
बरबस राज सुतहिं नृपु दीना।

जबर्दस्ती राज दे दिया कि भाई हम तो अब भजन करेंगे साधन करेंगे।

अब हम अपने विषय पर आते हैं। तो उस मनुष्य से महात्मा ने कहा तुम गरीब हो लेकिन तुम्हें एक वक्त भोजन मिलता है कि नहीं, तो उसने कहा नहीं मिलता।

एक हँसी की बात याद आ गई :—

राम राज्य में दूध मलाई कृष्ण राज्य में घी।
आज के राज्य में गरम पानी जब चाहे तब पी।

उस महात्मा ने कहा यदि तुम अपने को गरीब समझते हो तो हम तुमको दस हजार रुपया देंगे तुम अपनी आँखे हमको दे दो। उसको खाने को रोटी नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, रहने का घर नहीं, इतने पर भी क्या वह गरीब आदमी दस हजार रुपयों के बदले अपनी आँखे दे देगा ? नहीं। महात्मा ने कहा अच्छा तो तुम बीस हजार रुपया ले लो और नाक कान दे दो। तो क्या वह दे देगा ? नहीं।

महात्मा कहते हैं तुम्हारे शरीर में एक इन्द्रिय ऐसी है जो हजारों के मूल्यों की है, जिसको तुम १०,२० हजार की कीमत पर भी देने को तैयार नहीं तो फिर तुम गरीब कैसे हुए ?

बड़े भाग मानुस तनु पावा।
सुर दुर्लभ सदग्रन्थन्हि गावा ॥

पावा के माने मिला है, पहले से नहीं है। दो दिनों से इस माघ मेले में प्रचार किया जा रहा है कि दो महिलाओं ने मेले में बड़ी चोरियाँ की हैं, उन चोरियों में उनके पास से स्वेटर, बनियाइन, आदि अनेक चीजें मिली हैं, जिनका हो आकर ले जाय। तो क्या जो चीजें उन महिलाओं को मिली हैं वह उनके पास रहेंगी ? नहीं। छीन ली जायँगी।

इस तरह से बड़े भाग्य से मनुष्य शरीर मिला है वह क्या बराबर रहेगा ? पाई हुई वस्तु नहीं रहेगी। तुम चाहो कि तुम बने रहो, या तुम्हारे बाबा, परबाबा, सरबाबा सब बने रहें ? या तुम्हारे में ताकत है सबको बनाये रखने की ; मैं कलकत्ते जाता हूँ तो देखता हूँ सीढ़ियों पर आदमी सोते हैं। गर्मियों में लाखों आदमी प्लेटफार्म पर सोते हैं।

भगवान तुम्हारी कही कह दे तो क्या कहना ?

जो लोग रेलगाड़ी के अन्दर बैठै हैं वे प्लेटफार्म पर आये यात्री को कहेंगे कि पिछाड़ी गाड़ी खाली पड़ी है। पिछाड़ी जाओ। जो बाहर हैं वे सोचते हैं गाड़ी देर से छूटे तो ठीक रहेगा, बैठने को जगह मिल जायगी और जो अन्दर बैठे हैं वह सोचते हैं कि गाड़ी जल्दी छूट जाय तो ठीक रहे, बिना कारण लेट हुई जा रही है।

जो भीतर बैठे हैं वे कहते हैं अन्दर जगह नहीं है। बाहर वाले कहते हैं, हम आपको तकलीफ नहीं देंगे हमको अन्दर आने दें, खड़े खड़े चले जाएँगे। हमारे पर ऐसी बीत चुकी है। ये थर्ड क्लास के डिब्बों की बातें हैं।

अच्छा, किसी अन्दर बैठने वालों में कोई दयालु मिल गया और बाहर खड़े वाले को अंदर बैठा लिया, तब तक एक और मुसाफिर बाहर आ गया तो बाद में अंदर बैठने वाला यात्री ही कहने लग जायगा अंदर जगह नहीं है, अगाड़ी जाओ बहुत जगह खाली है।

भीतर बैठा है वह चाहता है जल्दी छूटे, बाहर खड़ा है वह

चाहता है लेट हो जाय तो जगह मिले, तो भगवान किसकी कही करे ?

इसलिए भगवान ने भी एक नियम बनाया—

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभ जीवन मरनु जसु अपजसु विधि हाथ ।।

कलकत्ते में मैं अपने एक मित्र के यहाँ ठहरा जिनके यहाँ तिलहन का व्यापार होता था। रात में ग्यारह बजे फोन आया कि सरसों का भाव ५०) से ४५) हो गया। सुनते ही वह रोने लग गये। हमने रोना सुनकर जाकर पूँछा, क्या हो गया ? उसने कहा स्वामी जी सत्यानाश हो गया। एक लाख का घाटा हो गया। हमने पूँछा-किसमें घाटा हो गया ? कहा-सरसो का भाव ५०) का ४५) हो गया।

हमने पूँछा तुमने कितने में खरीदा था। उसने कहा—२०) में खरीदी थी २५) हो गई। २५) से ३०) हो गई। ३०) से ३५) हो गई। ३५) से ४०) हो गई। ४०) से ४५) हो गई। ४५) से ५०) हो गई। अब फिर ५०) से ४५) हो गई हम तो बरबाद हो गये।

क्या ऐसे व्यक्ति को शान्ति मिलेगी ? कभी नहीं मिलेगी। आज संसार में क्यों चिन्ताएं बढ़ रही हैं, क्यों अशान्ति बढ़ रही है ? जो भी व्यक्ति भौतिक पदार्थों में अपने से बड़ों की ओर देखेगा उसकी चाहना बढ़ेगी। संतों ने बताया, महापुरुषों ने बताया कि यदि तुम्हारी आमदनी ५००) है तो तुम ४००) आमदनी वाले की

तरफ देखो कि वह कैसे गुजर करता है। यदि ६००) की आमदनी वाले की तरफ देखोगे तो शान्ति नहीं मिलेगी।

हमारे ब्रह्मलीन महाराज कहा करते थे कि न गरीब सुखी है न धनवान सुखी है। क्योंकि दोनों ही अभाव को देखते हैं। जिनके पास लाख रुपया है वह लाख पाने के चक्कर में रहता है। दो लाख वाला चाहता है चार लाख हो जाय।

जो दो चार करोड़ रुपयों का धनी होगा उसके दरवाजों पर बंदूक वाला पहरे पर रहेगा। क्योंकि उसको सुरक्षा का प्रबन्ध करना होता है। जब वह बाहर जायेगा तब भी उसके साथ बंदूक वाला चलेगा। जो जेल में रहता है उस जेल के फाटक पर भी बंदूक धारी रहता है। करोड़पति के लिए भोजन बनता है तो उसकी जाँच की जाती है। एवं जेल के कैदी के लिए बाहर से भोजन जाता है उसकी भी जाँच होती है। जेल के कैदी और धनवान में कोई अन्तर नहीं रहा।

धन को कमाने में दुख, रक्षा करने में दुख और चला जाय तो दुख। तो क्या धन सम्पत्ति एकत्रित नहीं करनी चाहिए? करनी चाहिए, लेकिन उसका तरीका है।

भरत जाइ घर कीन्ह विचारू।
नगर वाजि गज भवन भंडारू॥
संपति सब रघुपति कै आही।

भरत जी ने घर जाकर विचार किया कि नगर, घोड़े, हाथी, महल-खजाना आदि सारी सम्पत्ति रघुनाथ जी की है।

खजाञ्ची साहब खजाना रखकर ताला बंद करना भूल जायँ तो चोरी हो जाय तो सजा मालिक की होगी या खजाञ्ची की ? तात्पर्य इसका है जो कुछ भगवान ने तुमको दिया है उसकी रक्षा करने के लिए दिया है, मालिक बनने के लिए नहीं। इस दुर्लभ मनुष्य शरीर को प्राप्त कर इसका सदुपयोग करो।

माघ मेला कैम्प, प्रयाग ३१-१-७३

भक्तों का संग न छोड़ो

सब कहते हैं भगवान का भजन करो, लेकिन हम कहते हैं मत करो। यह उल्टी बात कैसी ? लेकिन समझो गंगाजी सीधी जायेगी तो कहाँ जायेगी, और उल्टी जायेगी तो कहाँ जायेगी ? हिन्दू बताओ, जैन बताओ, मुसलमान बताओ, बौद्ध बताओ, सीधी जायेगी तो खारे समुद्र में जायेगी, और उल्टी जायेगी तो भगवान के चरणों में पहुँचेगी।

एक बार हनुमान प्रसाद जी पोद्दार के साथ सत्संग हो रहा था तो किसी बात पर उन्होंने कहा कि स्वामीजी आप उल्टी गंगा बहा रहे हैं। मैंने कहा पोद्दार साहब उल्टी गंगा कहाँ जायेगी और सीधी गंगा कहाँ जायेगी ? तब उन्होंने कहा हम बात में आपको नहीं पा सकते।

इमानदारी से सोचो कि जितनी देर समूह के साथ सत्संग में बैठे हो उतनी देर यदि एकान्त में माला लेकर बैठते तो मनोराम नजाने कहाँ कहाँ भटकता फिरता।

अब भी मनीराम गया होगा, लेकिन बहुत थोड़ी देर के लिए गया होगा। जब ऐसे महोत्सव या सम्मेलन समाप्त होने को आते थे तो ब्रह्मलीन स्वामी शुकदेवानन्द जी कहा करते थे कि नौ नगद अच्छे तेरह उधार अच्छे नहीं। किसी दुकानदार के यहाँ ग्राहक जाता है वह कहता है कि एक हजार का सौदा दे दो एवं उधार लिख लो, दूसरा ग्राहक आकर कहता है कि पाँच सौ का सौदा दे

दो नगद रुपया ले लो। इन दोनों ग्राहकों में कौन अच्छा? निश्चय ही नगद वाला ग्राहक अच्छा। उधार की रकम मिल भी सकती है और नहीं भी मिल सकती।

आजकल किरायेदार तीन वर्ष का किराया नहीं देते। आज किसी छोटे आदमी को दो बात कहनी हो कही नहीं जा सकती। एक जवाना वह था जब गाँव में कोई चौकीदार आ जाता था तो तहलका मच जाता था।

तौ मैं कह रहा हूं कि भजन मत करो। भजन करना ठीक है लेकिन भजन का भी कोई फल है। भगवान राम जब प्रयागराज में आये तो भरद्वाज मुनि ने कहा—

आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू।
आजु सुफल जप जोग विरागू॥
सफल सकल सुभ साधन साजू।
राम तुम्हहि अवलोकत आजू॥

हे राम आपका दर्शन करते ही आज मेरा तप, तीर्थ सेवन, और त्याग सफल हो गया। आज मेरा जप, योग और वैराग्य सफल हो गया और आज मेरे सम्पूर्ण शुभ साधनों का समुदाय भी सफल हो गया।

इसके बाद प्रयाग में इसी आश्रम में जब भरत भरद्वाज आते हैं तो भरद्वाज कहते हैं—

सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं।
उदासीन तापस बन रहहीं॥

हे भरत ! सुनो हम झूठ नहीं कहते, हम उदासीन हैं, तपस्वी हैं और वन में रहते हैं।

तापस कौन होते हैं ? जो जमीन में गड़े रहते है। नहीं नहीं। ऐसे समाधि लगाने वालों को हम अनेकों को जानते हैं जो दुनिया को बेवकूफ बनाते हैं। यह सब ढोंग है।

भरद्वाज कहते हैं हम उदासीन हैं, किसी का पक्ष नहीं करते, तपस्वी हैं किसी की मुँह देखी नहीं कहते और वन में रहते हैं किसी से कोई प्रयोजन नहीं रखते—

सब साधन कर सुफल सुहावा।
लखन राम सिय दरसनु पावा॥
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा।
सहित प्रयाग सुभाग हमारा॥

सब साधनों का उत्तम फल हमें लक्ष्मणजी, श्रीरामजी, और सीता जी का दर्शन प्राप्त हुआ। उस महान फल का परम फल तुम्हारा दर्शन है। प्रयाग राज सहित हमारा बड़ा भाग्य है।

भरत तीर्थराज प्रयाग से क्या माँगते हैं—

मांगउ भीख त्यागि निज धरमू।
आरत काह न करइ कुकरमू॥

मैं अपना धर्म (न माँगने का क्षत्रिय धर्म) त्याग कर आपसे भीख माँगता हूँ। आर्त मनुष्य कौनसा कुकर्म नहीं करता ?

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम-जनम रति राम पद यह वरदान न आन॥

मुझे न अर्थ की इच्छा है, न धर्म की, न काम की और न मैं मोक्ष ही चाहता हूँ। जन्म-जन्म में मेरा श्री रामजी के चरणों में प्रेम हो, बस यही वरदान माँगता हूँ, दूसरा कुछ भी नहीं।

भरत बचन सुनि माझ त्रिवेनी।
भइ मृदु बानी सुमंगल देनी॥

भरतजी के वचन सुनकर बीच त्रिवेणी में से सुन्दर मंगल देने वाली कोमल वाणी हुई—

तात भरत तुम्ह सब विधि साधू।
राम चरण अनुराग अगाधू॥

हे तात भरत! तुम सब प्रकार से साधु हो, क्योंकि श्रीराम चन्द्र जी के चरणों में तुम्हारा अथाह प्रेम है।

साधु किसे कहते है? लोग हमारे लिये कहते हैं बड़े ऊंचे दर्जे के साधु आये हैं, जिनके परमार्थ निकेतन में आठ सौ कमरे बने हैं। ऐसे कहने वाले व समझने वाले बेवकूफ हैं। जिन भगवान के रोम-रोम में कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड है, उनसे एकत्व करने चले हो और आठ सौ कमरों में आस्था रखते हो तो बेवकूफ नहीं तो और क्या?

जो संपति सिव रावनहि दीन्ह दिये दस माथ।
सोइ संपदा विभोषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥

शिवजी ने जो सम्पत्ति रावण को दसो सिरों की बलि देने पर दी थी, वही सम्पत्ति श्री रघुनाथ जी ने विभीषण को बहुत सकुचते हुए दी।

कहने का तात्पर्य है कि राम का भजन छूटता है तो छूटने दो, लेकिन राम के भक्तों का संग मिलता है तो अवश्य करो। भरत के जैसा राम भक्त कौन होगा ?

जड चेतन जग जीव घनेरे। जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥
ते सब भए परम पद जोगू। भरत दरस मेटा भव रोगू ॥

भगवान राम ने जिन जड़ चेतन वस्तुओं की ओर देख लिया अथवा जिन वस्तुओं ने राम को देख लिया वे सब उसी क्षण परम पद के अधिकारी हो गये। परन्तु भरत के दर्शन से तो उनका भव (जन्म मरण) रूपी रोग ही मिट गया अर्थात् वे परम पद को प्राप्त हो गये।

भरत सरिस को राम सनेही।
जगु जप राम रामु जप जेही ॥

भरत की तरह राम स्नेही कौन होगा, कारण जगत श्री राम को जपता है, लेकिन श्री राम भरत का जप करते हैं।

मतलब इसका यह है कि भजन छूटता है तो छूटे, लेकिन राम भक्तों का संग न छोड़ो।

जीवन मुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान।

कहते हैं—

राम बुलावा भेजिया दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग में, सो बैकुण्ठ ना होय ॥

अगर आप राम राज्य चाहते हैं, घर को स्वर्ग बनाना चाहते

हैं, तो ब्रह्म मुहूर्त में उठकर साथ बैठकर भगवान की प्रार्थना करो, साधु का, यानी राम भक्तों का संग करो।

हमारे ब्रह्मलीन स्वामी हीरानन्द जी एक उदाहरण दिया करते थे। एक सज्जन ने धन कमाने हेतु परदेश जाने के पहले अपनी स्त्री से कहा—देवी मैं परदेश जा रहा हूँ, मेरी अनुपस्थिति में तुम्हारे मन में कोई विकार आ जाये तो किसी सदाचारी महात्मा के पास चली जाना।

एक बार उस देवी के मन में खराबी पैदा हो गई। उसी समय उनको पति की बात याद आ गई। जो अपने से बड़े के दिये हुए उपदेश को याद रखते हैं वे कभी गढ़े में नहीं गिर सकते। गाँव के बाहर एक सदाचारी साधु रहते थे, संध्या समय वह देवी उनके पास चली। महात्मा ने दूर से स्त्री को आते देखा तो संदेह हो गया कि इस असमय में वह क्यों चली आ रही है ? जरूर इनका कोई गन्दा विचार होगा। वे शौच को जा रहे थे, हाथ में उनके मिट्टी की मलहैया यानी हंडिया थी, उसको उन्होंने हाथ से पटक दिया और पटकते ही वह हंडिया टूट गई।

अब महात्मा जोर-जोर से रोने लग गये। वह स्त्री जब महात्मा के पास पहुँची तो महात्मा को रोते देख कर कारण पूछा। तब महात्मा ने कहा, आज तक इस मलहैया के अतिरिक्त मेरे गुह्य अंग को किसी ने नहीं देखा था, अब दूसरी मलहैया गुप्त अंग को देखेगी, इससे बुरा और क्या होगा ?

देवी ने कहा—महात्मा आपने मेरी आँखे खोल दीं। आप दूसरी जड़ हंडिया को अपना गुप्त अंग नहीं दिखाना चाहते और मैं

चली हूँ, पति की अनुपस्थिति में दूसरे पुरुष से अपनी काम वासना पूरी करने। धिक्कार है मुझे। बस वह देवी अपने घर वापस चली गई।

इसी से कहा जाता है राम भक्तों का संग, साधु का संग न छोड़ो।

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥

मुट्ठीगंज उत्सव, प्रयाग, ३०-१-७३

रामचरित से संगठन की शिक्षा

समाज में जो यह चाहता है कि हमारी कही सब कोई करे, हम किसी की कही नहीं करेंगे तो वह समाज का संगठन नहीं कर सकेगा। हमारे ब्रह्मलीन स्वामी श्री शुकदेवानन्द जी महाराज एक बात कहते थे—आज कल संसार के लोग समझते हैं कि डेढ़ अक्ल हमारे पास है, तथा आधी अक्ल में सब दुनिया है। ऐसे लोग समाज में फूट डाल सकते हैं लेकिन गठन नहीं करा सकते।

इस तरह के विचार जहाँ होगे उस जगह परिवार, समाज, देश में संगठन नहीं हो सकेगा। जिस घर में या सम्प्रदाय में छोटे का आदर नहीं होता उस सम्प्रदाय या घर का संगठन नहीं हो पाएगा।

भगवान श्री राम गुरु वशिष्ठ से कहते हैं—

यह सब सखा सुनहु मुनि मेरे।
भए समर सागर कँह बेरे॥

कौन सखा ? कुछ बंदर कुछ रीछ ये ही तो सखा थे। विभीषण लंका के राज्य को अपना राज्य नहीं समझता था। इसलिए भगवान राम को समर्पित करते हुए कहा—

देश कोष मन्दिर सम्पदा।
देहु कृपाल कपिन्ह कहुँ मुदा॥

विभीषण ने कहा कि सब सम्पति बंदरों को देने की कृपा करें।

नाव डूब जाती है लेकिन बेड़ा नहीं डूबता। बेड़ा उसको कहते हैं जो बाँसों को रस्सी से बाँधकर नदी में छोड़ दिया जाता है। बेड़ा पानी में डूबता नहीं। मनुष्य शरीर बेड़ा है।

नरतन भव वारिधि कह बेरो।
सन्मुख मरत अनुग्रह मेरो॥

संसार में जितनी भी लकड़ियाँ हैं चाहे उसके मूल में पानी दिया जाय या शाखाओं में पानी दिया जाय, पानी देने से ही वे हरी रहती हैं। लकड़ी की रक्षा पानी से होती है, पानी से फलती है, पानी से हरी होती है। पानी कहता है, तुम हमारे से भले ही दूर रहो लेकिन जब भी तुम हमारे पास आओगी तो हम तुमको अपने सर पर रखेंगे। मतलब यह कि लकड़ी पानी पर तैरती है डूबती नहीं।

इस प्रकार भगवान विभीषण को कहते हैं—इतने दिनों तक भले ही रावण के पास रहे हो, लेकिन आज तो तुम हमारे पास आ गए हो। भगवान ने विभीषण को शरण में ले लिया। इतना ही नहीं, विभीषण को लंकेश कह कर संबोधन किया—
सुग्रीव कहता है—

जानि न जाय निसाचर माया।
काम रूप केहि कारन आया॥

सुग्रीव ने बहुत तर्क लगाया। अपनी चलाने की कोशिश की

लेकिन जो अपनी चलाना चाहेगा, वह संगठन नहीं कर सकेगा। सुग्रीव आगे कहता है—

भेद हमार लेन सठ आवा।
राखिअ बाँधि मोहि अस भावा॥

लेकिन भगवान कहते हैं—

सखा नीति तुम नीकि विचारी।

तुमने अच्छा विचार किया है, लेकिन

मम पन सरनागत भय हारी।

जिनका आचरण सम होता है, वह किसी के साधन में भेद नहीं समझता। आजकल 'ब्रह्म' के नीचे बात नहीं होती। सब ब्रह्म है; चाहे मलदोष हो चाहे विक्षेप दोष हो।

तोता 'सीताराम, सीताराम' रटता है, लेकिन बिल्ली आती है तो टें टें करने लग जाता है। इसी तरह मैं ब्रह्म हूँ, मैं ब्रह्म हूँ, कहने वालों पर जब विपत्ति आती है तो ब्रह्म कहना भूल जाते हैं।

फ़ौज़ी को ट्रेनिंग किस लिए दी जाती है कि लड़ाई में काम आवे। ब्रह्म ज्ञान का अभ्यास किस लिए किया जाता है एवं जीव एवं परमात्मा का एकत्व किस लिए किया जाता है कि तुम्हारे पर कोई विपत्ति आवे, प्रतिकूलता आवे तो उन्हे याद करो।

मनसूर ने पूरा पूरा इश्क कमाया
दिलवर में आपको आप में दिलवर को पाया॥
जब हक का कलमा नौ के जवाँ पर लाया।
पाबंद शहर ने काफिर उसे बनाया॥

कहा अनलहक शूली पर भी नहीं माना ।
आसान नहीं है वसले सनम का पाना ।
ए दिल तू आशिक हुआ तो क्या घबड़ाना ।
हक इश्क समस तबरेज ने कर दिखलाया ।
पढ़ कुम्बे इजनी मुर्दे को होश में लाया ।
खिचवा के खाल भुस मुफ्ती ने भरवाया ।
पर हक को आपसे जुदा नहीं बतलाया ।
आशिक होना है जीते जी मर जाना ।
आसान नहीं है वस्ले सनम का पाना ।
दिलो और दुनिया दोनों की हवस छूट जावे
दिलवर का जलवा तभी दीद में आवे
हाँ खुदी का नामोनिशान गुम हो जावे ।
हक रह जावे न हक का भेद मिट जावे
निर्भय हो मुक्ति कहीं आना रहे न जाना ।
आसान नहीं है वसले सनम का पाना
ए दिल तू आशिक हुआ तो क्या घबड़ाना ।
दुनिया को अगर कत्ल करे घाटकी ओछी है
काटे जो अहंकार को समसीर उसे कहते हैं ॥
संसार कभी पूरा मिलता नहीं,
जितना मिलेगा वह ठहरेगा नहीं ।
परमात्मा कभी अधूरा मिलेगा नहीं,
मिलेगा तो कभी जाएगा नहीं ।

जो कहता है मैं इन्द्र हूँ तोफिर कहाँ उसकी ।
कब्जे में हमेशा रहे तोकिर उसे कहते हैं ।

ग्राप इस पर विचार करकर देख लो।

जो सास बहू से अपनी कही कराना चाहती है, वह सास बहू की बनेगी नहीं। जवान लड़के से पिता अपनी कही कराना चाहता है तो पिता पुत्र की बनेगी नहीं। पुत्र की कही करो तब पुत्र से अपनी कही करावो तो वह जरूर करेगा।

भगवान कहते हैं—

सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी ।
ममपन सरनागत भयहारी ।।

सुग्रीव तुमने ठीक विचार किया है, लेकिन मेरा प्रण तो शरणागत को अभय देना है।

सनकादिक पार्वती से कहते हैं—

कहा हमार न सुनेहु तब नारद कर उपदेश ।
अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ काम महेश ।।

अब तुम्हारा प्रण झूठा हो गया, कारण काम को तो महेश ने जला दिया। आजकल विवाह का मतलब ही होता है—भोग।

हमारे ब्रह्मलीन स्वामी जी कहा करते थे-विवाह का मतलब धर्मपत्नी है, भोगपत्नी नहीं। विवाह संस्कार होता है धर्मपत्नी बनाने के लिए, भोगपत्नी बनाने के लिए नहीं।

सनकादिक जो सदा ब्रह्म स्वरूप हैं उनको पार्वती कहती है- तुम ठीक नहीं समझते हो।

सुनि बोली मुस्काइ भवानी।
उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी॥

तुम्हारे जान में शम्भू ने काम अब जलाया है, अभी तक कामी बने रहे।

हमरे जान सदा सिव जोगी।
अज अनवद्य अकाम अभोगी॥

आगे कहती है—

तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा।
सोइ अति बड़ अविवेकु तुम्हारा॥

यह बात उन सनकादिक से कहा जो कि

ब्रह्मानंद सदा लवलीना
देखत बालक बहुकालीना॥

जब सनकादिक भगवान का दर्शन करने जाते हैं तो आसन देकर भगवान कहते हैं—

आज धन्य मैं सुनहु मुनीसा।
तुम्हरे दरस जाइ अघ खीसा॥
बड़े भाग पाइअ सत्संगा।
बिनहि प्रयास होंहि भवभंगा॥
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा।
सोइ अति बड़ अविवेक तुम्हारा॥

माताओं, भाइयों, पिताओं, वृद्ध पुरुषो! यह बड़ी काम की बात है। जो सास अपनी कही बहू से कराना चाहती है तो उस सास बहू की बनेगी नहीं। नाराज होने की बात नहीं।

कौशल्या माता क्या कहती हैं—सीता बन में कैसे रहेगी, जो बन्दर के चित्र को देख कर डर जाती है।

सिय बन बसिहि तात केहि भाँति।
चित्र लिखित कपि देखि डराती॥

कितना आदर सास कौशल्या बहू सीता का करती है। जब विवाह के बाद सीता आती है तो—

बधू सप्रेम गोद बैठारी। बार बार हिय हरषि दुलारी॥

आज कल बहू आती है तो सास कहती है, बर्तन माँजो, रोटी बनाओ, कपड़ा धोओ। यह नहीं देखती कि इतना काम बहू कर सकेगी कि नहीं।

भरत कैसे अपने पक्ष को सिद्ध करते हैं—

पितु सुरपुर सिय रामु बन, करन कहहु मोहि राज।
यहिते जानेउ मोर हित, कै आपन बड़ काज॥

जो दुश्मनों को अपना मित्र नहीं बना सकता, जो भाइयों के मन को नहीं जीत सकता, वह संगठन कैसे करेगा।

भरत राम से मिलने वन को चले। निषाद राज ने सुना तो कहा—

समर मरन पुनि सुरसरि तीरा।
राम काजु छनभंगु सरीरा॥

बाद में मालूम हो गया कि ये राम सखा है।

राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा।
चलेउ हरषि उमगत अनुरागा॥
गाउं जाति गुह नाउं सुनाई।
कीन्ह जोहारु माथ महि लाई॥
करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदय समाइ॥
भेंटत भरत वाढ़ि अति प्रीती॥

ये वही निषाद राज हैं जो कह रहे थे—

समर मरन पुनि सुरसरि तीरा।
राम काजु छनभंगु सरीरा॥

क्या यह हरिजन उद्धार नहीं है।

संगठन करना है तो राम के चरित्र से करो। जो स्वयं सुख भोगना चाहता है वह संगठन नहीं कर सकेगा। राम क्या कहते हैं—

जनमे एक संग सब भाई।
भोजन सयन केलि लरकाई॥
संग संग सब भए उछाहा।
विमल बंस यह अनुचित एकू।
बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू॥

यह बड़ी ही अनुचित बात है कि छोटों को छोड़कर बड़ों को राज्य दिया जाता है।

राम वन में थे लेकिन दिन रात भरत की ही सोचतें थे।

कैंची किसी दर्जी की टोपी में नहीं रहती, बल्कि सुई टोपी में रहती है। कैंची काटकर टुकड़े टुकड़े कर देती है इसलिए पैरों में पड़ी रहती है। और सुई टुकड़ों को सिल कर एक कर देती है इसलिए सर पर टोपी में रहती है। इस तरह जो संगठन करेगा वह सर माथे रहेगा और जो फूट डालेगा वह पैरों तले रहेगा।

माघ मेला कैम्प, प्रयाग ३०-१-७३

दुःख में भी अखण्ड प्रफुल्लित रहो

हमारे अनुकूल संसार को हम सुख मानते हैं। प्रतिकूल संसार को हम दुख मानते हैं। संसार का मतलब आप लोग समझ लें। किसी मास्टर से या समझदार विद्यार्थी से पूछो कि एक बटे पाँच एवं पाँच बटे पचीस में बड़ा कौन और छोटा कौन ? तो वह कहेंगे कि बराबर हैं।

मैं इस समय हाई कोर्ट के नगर में व्याख्यान दे रहा हूँ। इलाहाबाद में हाईकोर्ट है। मैं उदारता से कह सकता हूँ कि भारत के सबसे बड़े व्यक्ति तीनों प्रधान मंत्री यहाँ के हुए हैं। जवाहर लाल नेहरू यहीं के थे, लाल बहादुर शास्त्री यहीं के थे, इंदिरा गाँधी यहीं की हैं।

अनेक माताएँ कहती हैं कि भारतवर्ष में नारी का मूल्य बहुत कम है। यह बिल्कुल बेसमझी की बात है। वह कैसे ? लड़ाई झगड़े में कौन जीता–दुर्गा। अन्न सप्लाई में अन्नपूर्णा जीती। विद्या में सरस्वती जीती। धन में लक्ष्मी जीती। तब भी ये माताएँ कहें कि इनकी इज्जत कम है तो इनके भाग फूटे हैं। इतने बड़े करपात्री जी महाराज शीर्षआसन करते हुए पूरी दुर्गा सप्तसती का पाठ करते हैं, वह हमने आँखों से देखा है।

हमने पहले कहा है कि इंद्रियों के अनुकूल संसार को सुख कहा गया है। ५/२५ को संसार समझ लो। १/५ को इंद्रियाँ

समझ लो। आप लोगों के कहने के मुताबिक संसार एवं इन्द्रियाँ बराबर हुए कारण १/५ एवं ५/२५ बराबर हैं।

स्वर्गे मर्त्येच पाताले यत् किन्चित् चराचरम्
सर्वंच पंचभोक्तिवयम् षष्टम् किञ्चित् न दृश्यते।

चाहे स्वर्ग में चले जाओ, चाहे पाताल में चले जाओ, चाहे मृत्यु के गोद में चले जाओ सब जगह पाँच इंद्रियों के भोग हैं।

जाड़े में जिस कम्बल को आप लादे बैठे हैं, जेष्ठ की लपट में वही कम्बल प्रतिकूल हो जाता है। धर्मशास्त्रों में एवं नीति में लिखा है कि घर की शोभा स्त्री है। विपत्ति काले गृहणी परीक्षा। घर की विशेषता स्त्री से है। वही स्त्री यदि सन्यासी के घर में रात में मिल जाय तब? क्या यह ठीक है? नहीं। सन्यासी के लिए स्त्री प्रतिकूल है। गृहस्थ के लिए अनुकूल है।

इलाहाबाद में बहुत लोग दैवी सम्पद मंडल की प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना में जो दस नियम कहे जाते हैं उसमें तीसरा नियम है–अखण्ड प्रफुल्लित रहो दुःख में भी। सुख में या दुख में? दुख में। हमारे स्वामी धर्मानन्द जी ने विवेक की बात कही। यह मेरा स्वभाव है कि पूर्व का महापुरुष जो कुछ बोल जाता है उसका मैं प्रतिपादन करता हूँ।

विवेक का स्पष्टीकरण समझो। हमारे ब्रह्मलीन स्वामी जी महाराज बहुत सी बातें कहा करते थे। उन बातों को मैं याद दिलाता हूं। जीवों में अनेक प्रकार की शक्तियाँ हैं। रीछ पिछाड़ी से चलता है। जल की धारा के विपरीत मछली चलती है। तो क्या चीज विवेक है? उदाहरण से बात समझ में आ जायेगी।

हंस भी सफेद होता है, बगुला भी सफेद होता है। दूध में हंस की चोंच डाल दो, बगुला की भी डाल दो। जिसकी चोंच से दूध एवं पानी अलग अलग हो जाय उसको क्या कहोगे ? हंस। जिसके चोंच से दूध पानी अलग न हो सके वह भले ही हंस के रंग का हो, लेकिन वह है बगुला।

विवेकी पुरुष भी उसी को कहते हैं जो दुख-सुख, सत्-असत्, हानि-लाभ को अलग अलग कर दे। दूसरा उदाहरण सुनो। मिट्टी और शक्कर एक में मिला दो, एवं तुमसे कहा जाय कि अलग अलग करो तो क्या कर सकोगे ? मनुष्य नहीं कर सकता, चींटी कर सकती है। भिन्न-भिन्न जीवों में भिन्न-भिन्न शक्तियाँ हैं। इसी तरह विवेकी पुरुष में शक्ति है कि वह दुख-सुख, सत्-असत् आदि को अलग करदे।

जड़ चेतन गुण दोष मय विश्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुण पय लहहिं परिहरि बारि विकार॥

क्या मनुष्य में भी हंस होते है ? हाँ होते हैं। अयोध्या काण्ड का उपसंहार करते हुए गोस्वामी जी ने लिखा है कि ब्रह्म की गलती का किसी ने सुधार किया है तो भरत ने किया है।

सगुन छीर अवगुन जलजाता।
मिलै रचहि परपंच विधाता॥
भरत हंस रवि वंश तडागा।
जनम कीन्ह गुण दोष विभागा॥

सब की सम्मति थी भरत को राज्य मिले। पिता की आज्ञा, गुरु की आज्ञा थी ही। कैकेयी ने तो बरदान ही माँग लिया था।

जब राम वन को चले गये वशिष्ठ ने कहा कि पिता तुमको राज्य देने को कह गये हैं, स्वीकार कर लो लेकिन उन्होंने नहीं स्वीकार किया।

एक बार अखबार में निकला कि सुभाषचन्द्र बोस अमुक दिन अमुक समय दिल्ली के लाल किले पर झण्डा फहरायेंगे। मैं उस दिन दिल्ली में था। कम से कम आठ लाख आदमी उस समय उपस्थित थे। उस समय सुभाष बोस नहीं आये, एवं पंडित नेहरू को झण्डा फहराने को कहा गया। संयोग से सुभाष बोस आ जाते तो पंडित नेहरू क्या करते ? तो सुभाष बोस को आगे करते एवं पंडित नेहरू पीछे हो जाते।

इस प्रकार भरत ने कहा राम नहीं हैं इसीलिए मैं राज्य कर रहा हूँ नहीं तो—

पितु सुरपुर सिय राम वन करन कहहु मोहि राज।
यहिते जानउ मोर हित कै आपन बड़काज॥
मोहि राज हठ देहियउ जबही।
रसा रसातल जाहिअ तबही॥

एक बात है। दस लाख रुपया घर में रख सकते हो, लेकिन दस सेर अफीम नहीं रख सकते। ठेका मिल जाय तो जरूर रख सकते हो। जिस वस्तु पर प्रतिबन्ध हो, लेकिन सरकार की तरफ से ठेका हो तो वह वस्तु रखी जा सकती है। भरत ने कहा राज्य करना है तो ठेका मिलना चाहिए।

जिस लंका को रावण ने रखा उसी लंका को विभीषण ने भी रखा। लेकिन भगवान से ठेका ले कर रखा।

देश कोस मंदिर सम्पदा। देहु कपिन्ह कहुँ नाथ मुदा।

विभीषण कहते हैं देश यानी लंका मन्दिर यानी महल कोश यानी धन दौलत सब बन्दरों को दे दो। लेकिन भगवान ने क्या कहा ?

तोर कोष गृह मोर सब सत्य वचन सुनु भ्रात।
भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात॥

तुम्हारा कोष हमारा ही है।

संसार को रखना खराब नहीं है। लेकिन भगवान से ठेका लेकर रखो। ठेका लेकर रखोगे तो कोई नहीं पकड़ेगा। इसका मतलब है कि विवेक से हम अपने हितकी बात सोचें।

विचार करो कि संसारी सुख तुम्हारा हितैषी है या संसारी दुख ? भगवान कुन्ती से कहते हैं कि वरदान माँग लो। कुन्ती कहती है कि हम यही वरदान माँगते हैं कि हमको दुख मिले।

इमानदारी से बताओ कि जब संसारी दुख आते हैं तब भगवान का ज्यादा स्मरण होता है या संसारी सुख आने पर ? वैज्ञानिक तरीके से विचार करो कि कुम्हार घड़ा तो बनाए लेकिन इसके ऊपर हाथ की ठोकर न लगे तो घड़ा कैसे बनेगा ? एक हाथ घड़े के भीतर सहारा दिये रहता है दूसरे हाथ से ऊपर से पीटा जाता है। देखने वाले ऊपर से पीटने वाले हाथ को ही देखते हैं, लेकिन भीतर सहारे वाले हाथ को नहीं देखते।

प्रार्थना में कहा जाता है 'अखण्ड प्रफुल्लित रहो दुख में भी।' जब भी तुम पर दुख आवे तो यह निश्चय समझो कि भगवान

तुमको ठोकर लगा रहे हैं इसके बाद ही तुमको अवश्य सुख मिलेगा।

भगवान ने कहा है—

यत्तदग्रेविषमिव परिणामे अमृतोपमम्।
तत्सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्॥

गीता १८।३७

वह सुख जो प्रथम साधन के आरम्भ काल में यद्यपि विष के सदृश भासता है, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य होता है, वह सुख भगवत्-विषयक बुद्धि के प्रसाद से उत्पन्न हुआ सात्विक सुख कहा गया है।

आज कितने युग बीत गये प्रहलाद को हुए लेकिन आज तक उनके गुण गाए जाते हैं। लेकिन हिरण्यकश्यप को कोई नहीं याद करता।

जब दो पहलवानों की कुश्ती होती हो, एवं दोनों के पिता अखाड़े में बैठे हों तो कुश्ती होते वक्त किसी भी पहलवान का पिता अखाड़े में जायेगा? नहीं। लेकिन जो पहलवान जीत जाएगा उसका पिता अखाड़े में कूदकर उसको गोद में उठा लेगा। इसी प्रकार दुख आवे तो दुख को जीतकर विजय प्राप्त कर लो तो उसी समय परम पिता परमात्मा कूदकर तुमको गोद में ले लेगा।

मैंने कुश्ती का उदाहरण इसलिए दिया कि मैंने बचपन में बहुत कुश्तियाँ लड़ी हैं, मुग्दर भी चलाए हैं। अब तो सब भूल गया हूँ।

किसी कवि ने कहा है—

झूठे सुख को सुख कहे मानत है मन मोद।
काल चबैना जगत का कुछ मुख मैं औ कुछ गोद ॥

कान का सुख है शब्द, आँख का सुख है रूप, त्वचा का सुख है स्पर्श, जिह्वा का सुख है स्वाद, नासिका का सुख है गंध। लड़के को माता पुचकारती रहती है, लेकिन जब माता को नींद आती है, एवं बच्चा रोने लग जाय तो माता बच्चे को फटक देती है कि सोने ही नहीं देता। मैं ऐसे उदाहरण देता हूँ जिससे बात आसानी से श्रोताओं के समझ में आ जाय। शास्त्र के प्रमाणों की भी हमारे पास कमी नहीं है, लेकिन उन प्रमाणों से जल्दी समझ में नहीं आयेगा।

यदि सांसारिक सुख तुम्हारे सामने आएंगे तो वे भोगों की ओर प्रेरित करेंगे। जब सांसारिक सुख तुम्हारे पास नहीं होंगे तो भगवान का स्मरण होगा। आज कल बड़े आदमियों का हार्टफेल क्यों होता है? उनके पास सब तरह के वैभव होते हैं लेकिन तो भी लिप्सा बनी रहती है। आशा थी की विवाह में पाँच लाख के जेवर आ जाँयगे न आया तो बस हार्ट फेल।

प्रह्लाद के सामने दिक्कतें आईं, दुख आये। लेकिन इन दिक्कतों के आड़ में भगवान छिपे हुए थे। हिरण्यकश्यप प्रह्लाद से पूछता है कि मैं तुमको इतना कष्ट पहुँचा रहा हूँ लेकिन तू मरता क्यों नहीं। प्रहलाद कहता है—

राम मरे तो हम मरे नहीं तो मरे बलाय ।
अविनाशी की गोद में मरा न मारा जाय ।।

जब माता-पिता लाड़ में छोटे बच्चे को ऊपर उछालते हैं तो नीचे आते वक्त वह बच्चा रोता हुआ आता है या हँसता हुआ ? हंसता हुआ आता है। वह हँसता हुआ इसलिए आता है कि वह समझता है कि हमारे माता-पिता हमारी रक्षा के लिए हाथ लगाए हुए हैं। इसलिए आपने हमको कितना भी कष्ट पहुँचाया लेकिन हमारे आपके सबके पिता रक्षा के लिए अपना हाथ लगाए रहते हैं।

सांसारिक सुख हितैषी नहीं है, लेकिन सांसारिक दुख हितकारी है। आजकल तो दुख आता है तो भगवान से प्रार्थना की जाती कि यह दुख किसी दुश्मन पर पड़े। हमारे पर न पड़े। लेकिन भाई निश्चय जानो सांसारिक दुख जो है वह सुख से मिश्रित है एवं सुख भी दुख से मिश्रित है।

एक कवि ने कहा है—

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
यदि धारायें प्रतिकूल न हों।।

ऐसे सैकड़ों घर होंगे जहाँ गर्मियों में कूलर लगाये जाते हैं, सर्दियों में हीटर लगाए जाते हैं। ये घर में परिवार में सुख

पहुँचाने के लिए लगाए जाते हैं लेकिन सुख के साथ दुख मिश्रित देखो—

पितु आयसु भूषण बसन तात तजे रघुवीर।
विस्मय हरष न हृदय कछु पहरे बल्कल चीर॥

मन मुसुकाइ भानुकुल भानू।
राम सहज आनन्द निधानू॥
जननी दोष देहिं जड़ जेई।
जिन गुरु साधु सभा नहिं सेई॥
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी।
जो पितु मातु वचन अनुरागी॥

भोज पत्र के कपड़े पहन कर भगवान राम जंगल को निकल पड़े और कहते हैं बड़ा आनन्द है।

यह बताओ कि जब माता के गर्भ से आए तब आप नंगे आये या कपडा पहन कर। नंगे आये। दुनिया से जाओगे। तब नंगे जाओगे।

राम चरित्र राम के लिए नहीं है। तो किसके लिए है ?

तुम रघुवीर चरन अनुरागी।
पूछउ कथा जगत हित लागी॥

राम कहते हैं हम आए नंगे थे जाएंगे नंगे। माता ने जो बल्कल वस्त्र भेजे हैं वे हमारे हित के लिए हैं, हम इसको ही पहन बन को जायेंगे हमारा हित उसी में है जिससे पिता को दुख न हो।

विवेक से ही हम दुख को सुख को, भलाई-बुराई को हित-अनहित को सत्-असत् को पहचान सकते हैं।

विनु सतसंग विवेक न होई।
रामु कृपा बिनु सुलभ न सोई॥
अस विवेक जब देइ विधाता।
जब तजि दोष गुणहि मन राता॥

मुट्ठीगंज उत्सव, प्रयाग, २९-१-७३

जाको रही भावना जैसी

बनी हुई सड़क पर चलने में सुविधा रहती है बनिस्पत इसके कि नई सड़क बनाकर चला जाय। अपनी तरफ से नई सड़क बनाकर चलने में दिक्कत होगी, बनी हुई सड़क पर चलने में दिक्कत नहीं होगी।

डॉक्टर गोयल हमारे पुराने मित्र हैं। ये हमको जो कुछ मानते हों लेकिन हम इनको मित्र ही मानते हैं।

यदि कोई मन्त्र बोले—

चक्षुसूर्यो अजायत.........

चाहे इंग्लैण्ड से बोले, चाहे अमेरिका से बोले, चाहे जर्मनी से बोले, यानी विश्व के किसी भी कोने से बोले, चाहे मुसलमान बोले, चाहे इसाई बोले, चाहे हिन्दू बोले, कोई फर्क नहीं।

ऐसा अखबारों में कभी नहीं निकला कि हिन्दुस्तान का सूर्य दूसरा हो एवं अमेरिका का सूर्य दूसरी तरह का निकला हो।

गीता में भगवान ने १३वें अध्याय के ३३वें श्लोक में कहा है कि—'यथा प्रकाशयत्येक:' एक ही सूर्य प्रकाश करता है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रान्स, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान कोई भी इस श्लोक को नहीं बदल सकता।

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं

यह 'कृत्स्नं' शब्द सम्पूर्ण के अर्थ में है। यह शब्द गीता में कई दफे आया है। सम्पूर्ण जगत् का मतलब केवल इलाहाबाद नहीं।

एक बात और समझ लो, सूर्य अस्त नहीं होता, अस्ताचल को जाता है। जब सूर्य ही अस्त नहीं होता तो सूर्य का प्रकाशक कैसे अस्त हो जायगा ? नहीं होगा।

गीता के १५ वें अध्याय के १२ वें श्लोक में लिखा है—

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्॥

आदित्य में जो प्रकाश है, चन्द्रमा में जो शीत है, अग्नि में जो तेज है वह मेरा है।

मैं जो बात कहना चाहता था वह यह है कि एक ही सूर्य सारे विश्व को प्रकाशित करता है। चार अरब घड़े जल के भरे रखे हों तो उसमें सूर्य का प्रतिबिम्ब अलग-अलग पड़ेगा। तो यह एक ही सूर्य का अलग-अलग प्रकाश हुआ। यदि उन चार अरब घड़ों में अलग-अलग रंग का जल हो तो उन घड़ों में जैसा रं होगा सूर्य का प्रतिबिम्ब भी उसी रंग का होगा।

जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी॥

हमारे गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य को हम जनरल मर्चेन्ट की दूकान कहतें हैं जिसमें सब सौदें मिल जाते हैं। हम इन माताओं से कहतें हैं कि घर-घर- में रामायण रखो। भाई-

भाई में झगड़ा हो तो रामायण से निपटा दो। राजा-प्रजा का झगड़ा हो तो रामायण से निपटा दो।

जेठानी भोजपत्र का कपड़ा पहन कर वन जाय, और देवरानी घर में मौज करे तो झगड़ा अवश्य होगा? कौशल्या माता कहती हैं—

जो केवलु पितु आयसु ताता।
तौ जनि जाहु जानि बड़ी माता।

जो केवल पिता ने आज्ञा दी है तो पिता से बड़ी माता है। पहले दूसरे शास्त्रों को देखकर रामायण देखो तो रहस्य समझ में आवे। मनु स्मृति में लिखा है कि माता से विमाता दस-गुनी बड़ी है। पिता से माता दस-गुनो है। इस तरह पहाड़े से पिता से विमाता सौगुनी बड़ी हुई।

भई हम दरजा एक में थे तब ४० तक पहाड़े पढ़े थे। चालिस तक पौना, सवैया, डेढ़ा, अढैइया, ऊंठा, ढुंचा, पुंचा, उसके बाद ठुंचा पढ़ा है। हमने यह भी पढ़ा है कि जितने रूपयों का मन हो उतने ही आना का अढ़ाई सेर मिलता है। आज कल के लड़कों को ऐसे हिसाब पूछो तो पूरे कागज में गुणा-भाग करेंगे तब जाकर बता पाएँगे, वह भी सही हो जरूरी नहीं है।

मैं, आप से बता रहा था कि कौशल्या माता ने कहा कि यदि पिता ने बन जाने को कहा है, तो मैं माता होकर तुमको मना करती हूँ, अगर पिता-माता दोनों ने बन जाने को कहा है तो बन सैकड़ों अयोध्या के समान है:

जो केवल पितु आयसु ताता ।
तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ।।
जौ पितु मातु कहेउ बन जाना ।
तौ कानन सत अवध समाना ।।

विषयान्तर न हो जाय, इसलिये, विषय पर आता हूँ। जिस घड़े में जैसा रंग होगा, वैसे ही रंग का सूर्य दिखाई देगा, क्योंकि सूर्य एक है। इसी प्रकार भगवान भी एक हैं। अपनी-अपनी धारणा के अनुसार परमात्मा अलग-अलग तरह के दिखते हैं। दुष्टों को ये काल-रूप दिखाई देते हैं।

चूहे को बिल्ली के दाँत काल-रूप दिखाई देते हैं, लेकिन बिल्ली के बच्चे को वे ही दाँत सोफा सेट की तरह मुलायम दिखाई पड़ते हैं। बिल्ली के मुँह में चूहा पहुँच जाय, बच नहीं पाएगा। लेकिन बिल्ली का बच्चा चला जाय तो कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। क्या बिल्ली पक्षपात करती है? नहीं! भगवान कहते हैं:

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ।।

गीता ९।२८

जो मुझे जैसा भजता है, मैं भी उसे वैसा ही दीखता हूं। मैं भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, न कोई मेरा प्रिय है न अप्रिय है।

बिल्ली के बच्चे से कहा जाय कि डाक्टर गोयल से डाक्टरी पढ़ो तो क्या पढ़ेगा? उससे कहो बाबू विश्वम्भर नाथ अग्रवाल

वकालत पास किये हुए हैं, तुम भी वकालत पढ़ो, तो पढ़ेगा ? बिल्ली का बच्चा डाक्टरी भी नहीं पढ़ेगा एवं वकालत भी नहीं पढ़ेगा। वह क्या पढ़ेगा ? वह पढ़ेगा—म्याऊँ। सीधी-साधी भाषा है —म्याऊँ। म्याऊँ के अलावा वह बिल्ली का बच्चा कुछ नहीं बोलेगा। म्याऊँ का मतलब क्या है ? बिल्ली के बच्चे की माँ का नाम है—म्याऊँ।

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा।
भजहु मोहि तजि सकल भरोसा॥

यह हमने 'सकल भरोसा' शब्द की व्याख्या में ऊपर की बातें बताईं।

आप मुझे बताओ कि संसार में ऐसा कौन है जो दूसरे के अपराध की सजा स्वयं भोगता हो। गलती नारद ने की लेकिन सजा भगवान ने भोगी। दो बरदान तो दशरथ ने कैकेयी को देने को कहे थे, लेकिन सजा भोगी भगवान् राम ने। ऐसा तुमको संसार में कौन मिलेगा।

अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखउँ।
केहि खगेस रघुपति सम लेखउँ॥
उमा राम स्वभाव जेहि जाना।
ताहि भजन तजि भाव न आना॥

भगवान् के स्वभाव को जो समझ जायगा उसको उनके भजन के अतिरिक्त कोई चीज अच्छी नहीं लगेगी।

तो मैं कह रहा था बिल्ली का बच्चा म्याऊं के अलावा कुछ

नहीं कहेगा। बच्चा माने भक्त। भक्त वही है जो भगवान् के अलावा अन्य किसी को समझता ही नहीं है, जानता ही नहीं है।

नारद कहते हैं—

तब विवाह मैं चाहउँ कीन्हा।
प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा॥

नारद तो विवाह करना चाहते थे, उनको विवाह करने नहीं दिया और शिव विवाह करना नहीं चाहते थे तो विवाह करने के लिए कहा—

अब बिनती मम सुनहु सिव जौं मोपर निजनेहु।
जाइ विवाहहु सैलजहि यह मोहि मांगे देहु॥

भगवान कहते हैं—

सुन मुनि तोहि कहउ सहरोसा
भजहु मोहि तजि सकल भरोसा।
करहुँ सदा तिनकी रखवारी
जिमि बालकहि राख महतारी॥

'सदा रखवारी' तो वह कर सकता है जो चौबीस घण्टा पहरा देता है। सदा वही है जिसमें देश भी कल्पित है, जिसमें वस्तु भी कल्पित है, जिसमें काल भी कल्पित है। देश, काल, वस्तु तीनों इनके सत्ता के बिना नहीं हैं। उसकी सत्ता से ही देश काल वस्तु है।

भगवान ने गीता में कहा है—

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन॥

मैं वर्तमान को जानता हूँ, भविष्यत् को जानता हूँ, भूतकाल को भी जानता हूँ। स्वप्न जो देखा जाता है, वह किसी वस्तु का देखा जाता है, एवं किसी काल में देखा जाता है एवं किसी देश में देखा जाता है। तो स्वप्न में देश, काल, वस्तु तीनों मौजूद हैं। जगने पर वे देश, काल, वस्तु तीनों ही नहीं रहते, लेकिन स्वप्न में उन तीनों वस्तुओं को देखने वाला मौजूद रहता है। वह देखने वाला जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों में सदा रहता है। जो सदा रहता है वही रक्षा कर सकता है। जो मोटर से टकरा गया और उसके नीचे आकर मर गया वह क्या रक्षा करेगा ?

एक साधु मिट्टी से खेल रहा था। राजा की सवारी उधर से निकली तो साधु को मिट्टी से खेलते हुए देखकर पूछा कि मिट्टी से क्यों खेल रहे हो ? साधु ने कहा—मिट्टी से ही पैदा हुआ था, एवं एक दिन मिट्टी में ही मिल जाना है, जिससे कि मिट्टी में मिल जाने की याद बनी रहे, इसलिये मिट्टी से खेलता हूँ—

आदमी का जिस्म क्या है जिस पर सैदा है जहाँ,
मिट्टी की यह है इमारत और मिट्टी का मकां
खून का गारा लगा है ईंट जिसमें हड्डियाँ
चन्द स्वांसों पर खड़ा है, यह ख्याली आसमां
काल की पुरजोर आंधी जब इसे टकराएगी
देख लेना यह इमारत खुदबखुद गिर जाएगी ।।

यह शरीर भी साढ़े तीन तल्ले का मकान है। राजा साधु की बात से बड़ा प्रसन्न हुआ और कहा जो इच्छा हो माँग लो।

साधु ने कहा—हम सधु हैं हमें कुछ नहीं चाहिए। राजा ने कहा—तो भी कुछ माँग लो क्योंकि हमारी इच्छा है। तब साधु ने कहा—तुम्हें देना ही है तो जो हम माँगतें हैं वह देग्रो—हम जहाँ चलें वहाँ चलो, हम सोएँ तुम जगो, हम खाएँ तुम भूखों मरो।

राजा ने कहा—ये चीजें तो हमारे पास नहीं हैं, साधु का कहने का तात्पर्य था, हम सोएँ तुम जागो, यानी जीव सो जाता है तो भी सुषुप्ति का द्रष्टा मौजूद रहता है।

इस तरह बात नहीं समझ में ग्राती तो उदाहरण के द्वारा समझो। दस जने सो रहे हो, कोई किसी नाम से पुकार रहा हो, 'बड़े भैया, बड़े भैया।' सोने की नकल नहीं, वास्तव में सच्ची निद्रा में हो तो ग्रक्सर होता है कि बड़े भैया ही निद्रा से जग जाते हैं। वह जो सो रहा था उसको ठोकर मारी उसके ग्रन्दर जागने वाले ने, तो बड़े भैया उठ बैठे। हम जहाँ जातें हैं वह हमारे साथ-साथ चलता है। हम जब सोते हैं तो वह जागता है।

इसलिए हमने निवेदन किया कि भगवान् सब का एक है, लेकिन जिसकी जैसी भावना है, उसको उसी प्रकार प्रतीत होता है। बिल्ली के दाँत चूहे के लिये जल्लाद हैं, लेकिन बिल्ली के बच्चे के लिए सोफा सेट हैं, यानी भक्त के लिये भगवान् सब कुछ है।

मैं दुनिया के लोगों से पूछता हूँ, तुमको ग्राँख की ज्यादा जरूरत है या पेट की ग्रथवा प्राण की। सब कहेंगे कि प्राण की ज्यादा जरूरत है। तुम्हें ग्राँख की ज्यादा जरूरत है तो स्वामी शरनानन्द जी महाराज बिना ग्राँख के जिन्दा हैं कि नहीं। यदि तुम्हें नाक की, कान की, त्वचा की ज्यादा जरूरत है तो, नकटे,

बहरे, फालिज के मारे हुए लोग जिन्दा हैं कि नहीं। मतलब यह है कि बिना आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा के जीवित रहा जा सकता है, लेकिन बिना प्राण के जीवित नहीं रहा जा सकता।

यह किसी पागल ने थोड़े ही कहा है—

मागहु भूमि धेनु धन कोसा।
सर्बस देउँ आजु सहरोसा॥
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं।
सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं॥
सब सुत प्रिय मोहि प्राण कि नाईं।
राम देत नहिं बनइ गोसाईं॥

आजकल पिता कहता है मुझे पुत्र बहुत प्यारा है, स्त्री कहती है मुझे पति बहुत प्यारा है, पति कहता है मुझे स्त्री बहुत प्यारी है। लेकिन दुनिया से पूछो पिता को पुत्र प्यारा है, स्त्री को पति प्यारा है, पति को स्त्री प्यारी है या अपनी आत्मा प्यारी है।

यदि प्राण निकल जाय तो लड़का प्यारा है कि नहीं ? यह सम्प्रदाय की बात नहीं है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई की बात नहीं है, यह तो विवेक दृष्टि है कि प्राण है तो लड़का प्यारा है।

आज कल लोग कहते हैं कि स्वामी जी हम गृहस्थी के चक्र से मुक्त हो गए हैं। हमने एक से पूछा कैसे मुक्त हो गए ? तो कहा, हमने चारों लड़कों को चार मकान बना दिए, चार मोटरें दिला दीं, मकान और कमरे खूब सजा दिये, चार-चार सेट सोफा सेट

दे दिए। भोजन के समय आठ-आठ कटोरियों में सब्जी आ जाती है।

मैं कहता हूँ, तुमने लड़को को, इन्द्रियों के सुख का साधन दे दिया है तो वे लड़के नर्क को जाएंगे या परमात्मा की प्राप्ति में लगेंगे।

पाँचों इन्द्रियों में फँसने से जीव को चौरासी लक्ष योनियाँ मिलती हैं। एक योनि में फँस गया तो १६ लाख अस्सी हजार योनियाँ मिलेंगी। इन्द्रियों का सुख तुमने अपने लिए रखा—इन्द्रियों का सुख तुमने लड़के को दिया, इन्द्रियों का सुख तुमने स्त्री को दिया, इन्द्रियों का सुख तुमने मित्र को दिया तो नर्क जाने की तैयारी की या मोक्ष की ? यह बड़ी ही कड़ी बात है।

पाँचों इन्द्रियों में न फँसे इसके लिए जंगल में जाने की आवश्यकता नहीं है। गीता में भगवान ने इसका उपाय बताया है—

पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि।

गीता ५।८-९

देखो, सुनो, स्पर्श करो, सूँघो, खाओ, जाओ, सोओ, श्वास लेओ, बोलो, छोड़ो, ग्रहण करो, आँखें खोलो, मींचो, सब काम करो, लेकिन करते हुए इनमें न फंसो यही तो तरीका है।

नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्ववित् ॥

तत्व को जानने वाला सांख्ययोगी इन सब कर्मों को जानते हुए भी यह मानता है कि वह कुछ नहीं कर रहा है।

इस श्लोक में 'तत्व वित्' शब्द लगा है। तत्ववित् पुरुष ऐसा क्यों मानता है कि वह कुछ नहीं कर रहा है। तमोली के दूकान के शीशे के सामने कितने ही लोग गुजरते हैं लेकिन किसी का फोटो नहीं आता। इसके विपरीत कैमरे के सामने जो भी आयेगा उनकी फोटो खिच जायेगी, क्योंकि उसमें फिल्म लगी है। इसी तरह यह शरीर है इसमें मन रूपी फिल्म है जो कि विषयों में फँसा रहता है। एवं जिस तरह तमोली के शीशे के पीछे फिल्म न होने से फोटो नहीं आती, उसी तरह जिन्होंने मन भगवान को अर्पण कर दिया है, उन पर विषयों की छाप नहीं पड़ती। क्योंकि वहाँ मन है ही नहीं।

रत्नाकर स्तव गृहम् गृहिणी च पद्मा
किं देवमस्ति भवते जगदीश्वराय
आभीरि बाम नयनाऽहृत मानसाय
दत्तम् मनो यदुपते कृपया गृहाण ॥

हे भगवान, रत्नाकर समुद्र में तुम्हारा घर है, लक्ष्मी आप का पैर दबाती हैं, गोपिकाओं ने तिरछी चितवन से तुम्हारे मन को ले लिया है, वह मन तुम्हारे पास नहीं है, मेरे पास है वही आप को देते हैं।

आजकल के जापानी वेदान्ती होते हैं वे कहते हैं इन्द्रियाँ—इन्द्रियों के अर्थों में बर्त रही हैं, हम तो द्रष्टा हैं द्रष्टा।

हम कहते हैं—द्रष्टा नहीं भ्रष्टा हैं। एक दृष्टान्त याद आ गया। पति पत्नी घर में सो रहे थे कि चोर घुस आए। स्त्री ने कहा—चोर आ गए हैं।

पति ने कहा—'हम देख रहे हैं'
स्त्री बोली—'सेंध लगा रहे हैं'
पति ने उत्तर दिया—'हम देख रहे हैं।'
स्त्री बोली—'बक्सा तोड़ रहे हैं'
पति ने कहा—'हम देख रहे हैं'
पत्नी बोली—'जेवर की पेटी निकाल लिए हैं)
पति ने कहा—'हम देख रहे हैं'
पत्नी क्रोध से बोली—'लेकर चले गये'
पति ने कहा—'हम देख रहे हैं'

स्त्री ने कहा—तुम्हारे देखने में आग लग जाय। चोर चोरी कर ले गये, तो भी तुम देख ही रहे हो।

इसी प्रकार वे वेदान्त के दृष्टा-श्रष्टा हैं। दृष्टा कैसे होने चाहिए, उनका दृष्टान्त देता हूँ। मैं उस जमाने को जानता हूँ जब बैल की गाड़ियाँ चलती थीं। उन गाड़ियों में पचास-पचास मन बोझा लादता था। सुबह गाड़ियाँ खोली जाती थीं एवं गाड़ीवान बैलों को बाएँ तरफ चलाना शुरू कर देता था। जब बैल स्वाभाविक ही बाएँ तरफ चलने लग जाते थे तो गाड़ीवान गाड़ी पर सो जाता था। यह दृष्टान्त है 'दृष्टा' का।

दृष्टा उसी समय कहा जा सकता है जब बैल रूपी इंद्रियाँ अपने-अपने स्वभाव में बरत रही हों।

भगवान सब में एक हैं, हम यह समझ कर संसार में रहें, दृष्टा का कर्त्तव्य है इन्द्रियों को अपना-अपना विषय दें, लेकिन उसमें मन सम्मिलित न हो।

माघ मेला कैम्प, प्रयाग २९-१-७३

जीवन मुक्त ब्रह्म पर चरित सुनहि तजि ध्यान

पाँच हजार वर्ष पहिले ऋषिलोग हमारे हित की बात कह गये। उन्होंने कहा कि मिलकर सत्संग करने में बड़ा लाभ है। जो भजन नहीं करते उनकी बात तो छोड़ो, लेकिन जो लोग भजन करते हैं, उनके लिए, इमानदारी से बताओ कि उन्हे नींद के झोंके आते है कि नहीं ? क्या कहा ? आते हैं। तो मालूम होता है हमारी बात ठीक है।

लेकिन क्या इस वक्त भी नीद आ रही है ? नहीं आ रही है। एकबार ब्रह्मलीन स्वामी जी ने १० ऊँचे दर्जे के साधु महात्माओं को कहा कि आज हम ध्यान कराएँगें। उसमें एक हम भी थे। हमने कहा कि स्वामी जी हमको तो आप छोड़े। कारण हमने सोचा कि ध्यान में यदि हमको नींद आगई तो लुटिया ही डूब जायेगी, क्योंकि हम ऊँचे दर्जे के महात्मा समझे जाते हैं।

१० जने जो ध्यान करने बैठे तो सब ऊँचे दर्जे के थे, उनके नाम नहीं बताएँगे, नहीं तो पोल खुल जायगी। हमने स्वामी जी से कहा कि हम डंडा हाथ में लिए रहेगें, जिसको भी नींद आएगी उसके सरमें थोड़ा-सा डंडा टकरा देगें। मैं ठीक कहता हूँ, १० जनों में ९ जने ध्यान में बैठे थे मैं डंडा हाथ मे लिये था। उन ९ जनों में ८ जनों को नींद की झपकी आ गयी और हमने उनको डंडा लगा दिया।

आज से पाँच हजार वर्ष पहले महर्षि वेद व्यास ने लिखा 'संघे शक्तिः कलौयुगे'—कलयुग के माने :

तामस बहुत रजोगुण थोड़ा ।
कलि प्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥

आजकल यह बात है कि नहीं ?

सच-सच बताओ नोट गिनने में नींद आती है या नहीं ? नहीं आती। क्योंकि कि उसके गिनने में मन लगा रहता है। दस जने बैठकर जहाँ सत्संग करते हों वहाँ भी नींद नहीं आएगी।

मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ। तेल का चिराग एक जल रहा हो उसके नीचे अंधेरा होगा कि नहीं ? जहाँ पचीस, तीस, चालिस, पचास चिराग एक साथ जलतो हों वहाँ अधेरा नहीं होगा। इसी प्रकार वर्तमान समय में अनेक व्यक्ति बैठ कर जहाँ सत्संग करते हैं वहाँ नींद नहीं आती। महर्षि वेदव्यास ने जो बात लिखी थी उसका उदाहरण मैंने देदिया।

जहाँ सत्संग की रुचि हो, दस जने बैठकर जहाँ सत्संग करते हों, वहाँ निद्रादेवी नहीं रहती। भगवान राम ने अपनी प्रजाओं से कहा :

'जीवन मुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान'

ध्यान करने में कई क्लास पास करने पड़ते हैं, पहले यम करो फिर नियम करो, प्राणायाम करो आदि तब जाकर ध्यान लगेगा। लेकिन कोई अच्छा प्रवचन करनेवाला हो तो यह इन्तजारी रहती है कि अब क्या निकलता है, आगे क्या बात आएगी, अब

कौनसा प्रसंग चलेगा ग्रादि। इस तरह नींद नहीं ग्राएगी। ग्रनेक जने मिलकर सत्संग करते हैं तो चित्त समाहित होता है।

एक माता ने ग्रपने लड़के से कहा कि बाजार से एक रुपये का घी लेग्राग्रो। यह उस समय की बात है जब एक रुपये का सवा-सेर घी मिलता था। हमारे बचपन में सबसे पहले जब मैनपुरी में सम्मेलन किया था तो उस समय एक रुपये का बीस छटाँक घी मिलता था। वह लड़का घी लेने चला। जेष्ठ का महीना था। उस समय घी पिघला हुग्रा रहता था। जिस कटोरे में घी लाना था वह बैठकदार था। कटोरे में सेर भर घी ग्रागया तो दूकान-दार ने कहा, पाव भर घी किसमे दें। लड़के ने बैठकदार कटोरे को पलट कर कटोरी नुमा पेंदेको दिखा कर कहा पावभर घी इसमें दे दो। घर गया तो माँ ने पूछा कि बेटा एक रुपये में घी क्या इतना ही मिला ? उसने कहा, नहीं ग्रौर भी मिला है, इतना कह कर कटोरे को सीधा किया ग्रौर कहा इतना ग्रौर है। ग्रब बताग्रो कितना घी रहा ? कुछ भी नहीं रहा।

कहने का तात्पर्य है हिफाजत से बर्तन रखो तब तो घी ठहरेगा ग्रर्थात ग्रपनी श्रद्धा रूपी बर्तन ठीक रक्खो, तब उसमे ज्ञान भक्ति रूपी घी ठहर सकेगा।

हमारे स्वामी धर्मानन्द जी ने ग्रपने प्रवचन में एक कथा कह-कर बीच में छोड़ दी क्योंकि वह समझते हैं कि बूढ़ा ग्रपने ग्राप उसको पूरा करेगा।

एक लड़की वाले ने लड़के वालेसे कहा कि हमारी बरात में कोई बूढा न ग्रावे। लड़के के बाबा ने कहा बात तो ठीक कही, लेकिन

हमें चुपके से लेचलो । पेटी में बन्द कर-कर ले चलो । लड़के के बारात में बाबा छिपकर पहुँच गया बाबा का अर्थ समझ में आया । बाबा का मतलब ही है कि, जिसका किसी भी चीजमें न हो दावा ।

बाबा होकर किसी चीज में दावा करता है तब या तो वह कुत्ता बनेगा या धन पर साँप बनेगा । ऐसा पुराणों में लिखा है । इसलिए लिखा है—

होय न विषय विराग भवन बसत भा चोथपन ।
हृदय बहुत दुःख लाग जनम गयउ हरि भगति बिनु ॥
बरबस राज सुतहिं नृप दीन्हा,
नारि समेत गवन बन कीन्हा ।

लड़की वाले बारात में बूढ़े को नहीं चाहते थे लेकिन वह पहुँच ही गया । बूढ़ों का आदर करने के कारण भीष्म को इच्छा मृत्यु का वरदान मिला था । आजकल बूढ़ों का आदर कितना है ?

ससुरारी पियारि लगी जबते ।
रिपु रूप कुटुम्ब भए तबते ॥
सुत माने मात पिता तब्र लों ।
अबलानन दीख नहीं जब लों ॥

मैं अनर्गल नहीं कह रहा हूँ । दावा करना हो तो गोस्वामी तुलसीदास पर करो । जहाँ घर में देवी जी आ गईं तो कैसी अम्मा और कैसे बाबा ? मित्र लोग कहते हैं तुमने अपने पिता को इतना बढ़ावा क्यों दे रखा है ?

लेकिन उन लोगों ने साहित्य को नहीं देखा। जिस समय भगवान राम को वनवास होता है, वनवास होने के साथ-साथ लक्ष्मण राम के साथ-साथ चलने लगते हैं तो लक्ष्मण उर्मिला को कहते हैं।सीता जी वन चल रही हैं तुम भी चलो। यह प्रसंग बाल्मीकि रामायण में आया है, उर्मिला कहती है कि पति देवता यदि सुमित्रा नहीं होती तो तुम्हें हम कहाँ मिलते। लक्ष्मण जी की माँ का नाम क्या था, 'सुमित्रा'।

लेकिन आजकल क्या कहा जाता है ? इस बुढ़िया की कही हम नहीं करेंगी। हमारो चूल्हो अलग रखो। अनर्गल नहीं बोल रहा हूँ। १०/५ की कथा तो यहाँ की सुना सकता हूँ। लड़के अक्सर कह देते है, हमारी अम्मा को दूसरे घर की बिटिया अच्छी नहीं लगती। समय की रफ्तार ही यह है; क्या किया जाय ?

उर्मिला कहती हैं पति देवता, अम्मा ने क्या कहा है ?

जेहि न राम वन लहहिं कलेसू।
सुत सोई करहु यहै उपदेसू॥

यह उपदेश है कि राम को किसी प्रकार क्लेश न हो। यदि तुम मुझे अपने साथ लिए चलते हो और राम की सेवा का समय हो गया एवं उसी समय हमारा भी कोइ काम हो गया तो उस तरफ आपका ध्यान हो जायेगा एवं आप राम की सेवा से वंचित हो जाओगे एवं इससे सास की आज्ञा की अवहेलना हो जायगी।

गुरु पितु मातु बन्धु सुर साईं।
सेइअ सकल प्राण की नाईं॥

राम प्राण प्रिय जीवन जीके।
स्वारथ रहित सखा सबही के
अस जीय जानि संगजनि जाहू।

जीवन का लाभ ले लो।

लड़की वालों ने कहा, तुम बुड्ढा साथ नहीं लाए, इसलिए बारात तो अच्छी ले आए, लेकिन भाँवरे हम तब डालेंगे जब हमारे घर के नीचे बहने वाली नदी को दूध से बहा दो। दूध से नहीं बहा सकते तो लौटा ले जाओ अपने लल्लू को। लड़के का बाप अपने पिता के पास गया तो उसने कहा कि घबड़ाओ नहीं। लड़की वालों को एक चिट्ठी लिख देते हैं।

लड़के के बाप ने कहा, पिताजी बारात वापस चली जाएगी तो बड़ी बदनामी होगी, आबरू चली जाएगी। बाबाने कहा, आबरू तुम्हारी बिल्कुल नहीं जाएगी तुम उन लड़की वालों से कहो कि वह पानी वाली नदी जो बह रही है उसे पहले बन्द करो तो हम बाद में दूध की नदी बहाएँगे। जब लड़के वालों ने यह बात कही तो लड़की वालों ने कहा, बारात में जरूर कोई बूढ़ा आ गया है।

कहने का तात्पर्य यह कि बड़ी सुन्दर बात स्वामी धर्मानन्द ने छेड़ी थी उसके समर्थन में बात कही जा रही है। उपदेशक लोग जब व्याख्यान देने बैठते हैं और भगवान का ध्यान करते हैं तो अनेक भाव पैदा होते हैं। उनकी इच्छा होती है कि यह भी कहो, ऐसा भी कहो, वैसा भी कहो। जैसे कपड़े की दूकान पर ग्राहक

जाता है तो दूकानदार कहता है कि यह भी थान लो, यह धोती लो, कमोज का कपड़ा लो आदि-आदि। ग्राहक चक्कर में पड़ जाता है, ऐसे हम लोग दुकानदार हैं, श्रोता लोग ग्राहक हैं।

एक गाँव ऐसा है, जहाँ कोई महात्मा जाते हैं उनसे वे गाँव वालें मन्त्र ले लेते हैं। जब भी जो कोई महात्मा जावे उन सबसे वे मन्त्र ले लें। एक सन्त ने गाँव वालों से पूँछा कि क्यों सबसे मन्त्र लेते हो तो कहा कि जब ये अपने आश्रम जाएँगे तो कहने को हों जाएगा कि उस गाँव वाले सब हमारे चेला-चेली हो गए। लेकिन हम किसी के चेला-चेली नही हैं। रुपया दो रुपया जाते वक्त विदाई देनी पड़ती है सो हम दे देते हैं।

एक साधक की आदत थी उस गाँव में जो भी साधु महात्मा जाए उनसे पूछले कि कोई साधन बताओ। एक बार एक महात्मा गए तो साधक से पूछ बैठे कि इसके पहले भी किसी ने कोई साधन बताया है कि नहीं। तो साधक ने बताया कई महात्माओं ने कई साधन बताए हैं डायरी में सब लिखा है। महात्मा ने समझ लिया यह साधक केवल साधन ही पूछने वाला है करता धरता कुछ नहीं। शिक्षा देने की दृष्टि से कहा कि तुम्हें साधन बताते हैं लेकिन पहले एक फावड़ा लाओ। साधक फावड़ा ले आया। साधक ने समझा कि यह महात्मा बढ़िया है जो फावड़ा का साधन बताते हैं। महात्मा ने कहा, हम अच्छा पानी चाहते हैं इसलिए यह जमीन खोदो। साधक ने एक फुट जमीन खोद डाली। महात्मा ने कहा यह जमीन अच्छी नहीं है, दूसरी जगह खोदो। दूसरी जगह खोदो तो कहा यह जमीन बलुही है तीसरी

जगह खोदो। तीसरी जगह खोदा तो वहाँ कंकड निकल आया तो कहा चौथी जगह खोदो। चौथी जगह खोदा तो कहा यहाँ खारा पानी निकलेगा। इस तरह कई जगह खोदने को कहा तो साधक ने कहा, तुम बाबा हो या तुम्हारा दिमाग खराब है।

साधक ने कहा एक जगह खोदने से पानी अपने आप निकल आवेगा। दस जगह खोदने पर पानी थोड़े ही निकलेगा। पृथ्वी का ऐसा कौन सा भाग है जहाँ पानी नहीं है।

गुरु महाराज कहते थे :—

सब घट मेरा साँइया सूनी सेज न कोय।
बलिहारी वह घटकी कि जा घट प्रगट होय॥

मैं राजस्थान को जानता हूँ जहाँ तीन सौ फीट नीचे पानी है। मैं ऐसे गाँव को जानता हूँ जहाँ साठ फुट नीचे पानी है। हमीरपुर को मैं जानता हूँ जहाँ मैंने व्याख्यान दिया है वहाँ १२५ हाथ नीचे पानी है। ऐसे ही जहाँ-जहाँ मनुष्य शरीर हैं वहाँ-वहाँ उसके अन्दर भगवान है। यदि ऐसा न हो तो फिर यह क्यों कहा जाता है कि—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृदयेऽर्जुन तिष्ठति।

तो वह साधक जिसने डायरी में अनेक साधनों को नोट कर रखा था, उस महात्मा से कहता है कि तुम्हारी बुद्धि खराब हो गई है, एक जगह खोदो तो पानी निकलेगा जगह-जगह खोदने से पानी नहीं निकलेगा। महात्मा बोले तुम नासमझ हो, समझते नहीं हो। एक ही साधन करो तो परमात्मा अवश्य मिलेगा।

अब मैं जन्मु सम्म हित हारा।
को गुन दूषन करै विचारा ।।
गुरु के वचन प्रतीति न जेही।
सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही ।।
जनम कोटि लगि रगड़ हमारी।
बरउँ सम्भु न त रहउँ कुआरी ।।

यह माँ पार्वती की बात है। पार्वती को शम्भु मिले कि नहीं? जमीन खोदो, चाहे पथरीली हो चाहे बलुही हो एक जगह खोदने पर पानी निकलेगा अवश्य, इस तरह एक ही साधन करने पर कभी न कभी भगवत प्राप्ति अवश्य होगी।

मुट्ठीगंज उत्सव, प्रयाग, २८-१-७३

सर्वभूतहिते रताः

पहले भगवान का नाम लिया जाय। लोग पूछ बैठते हैं कि पहले भगवान का नाम क्यों लिया जाय ? ऐसे लोगों से मेरा निवेदन है कि दाहिनी तरफ इकाई का एक लिखा हो एवं उसके बाएँ तरफ दश सून्य (०) लिखे हों उसकी कीमत कितनी होगी ? सिर्फ १ और यदि बाँए तरफ इकाई हो दाहिने तरफ शून्य हो तो जितने अधिक शून्य होंगे उतनी ही अधिक उसकी कीमस होगी। इसलिए भगवत नाम पहले लेकर काम किया जाय तो वह काम सिद्ध होता है।

राम नाम एक अंक है, सब साधन है शून।
अंक गए सब शून्य है, अंक रहे दशगून ॥

यह दैवी सम्पद मण्डल का कैम्प है। इसका मूल लक्ष्य है 'सर्वभूत हिते रताः।' यानी सबका हित चाहना। इसके विपरीत आजकल सब लोग अपना ही हित चाहते हैं। चाहते हैं कि हमारा हित हो, हमारी स्त्री का हित हो, हमारे बच्चों का हित हो। वास्तव में विश्व में दुःख और अशान्ति का यह प्रधान कारण है।

भगवान राम सबका हित चाहते थे। इसलिए जब वे वन में गए तो सब पेड़ राम के हित के लिए फल देने लग गए, क्योंकि राम स्वयं सब भूतों के हित में लगे रहते थे।

सब तरु फले राम हित लागी।

जो समाज में रहकर केवल अपने शरीर की रक्षा के लिए कर्म करता है शास्त्र उसको मुर्दा बताते हैं। श्वास चलने पर भी वह मुर्दा ही होता है।

छैसो इक्कीस सहस्र है श्वास इक दिन रात।
सब लोहार की चाम सम बिनु हरि भजन बितात॥

यदि हरि भजन नहीं किया तो दिन रात इतने श्वासों का चलना लोहार की धोकनी की तरह प्राणहीन है।

जिन हरि कथा हृदय नहिं आनी।
जीवित शव समान ते प्रानी॥

सदगुरु संशय रूपी सर्प का नाश करता है।

कर्णधार सद्‌गुरु दृढ़ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा॥

कर्ण माने कान, धार माने पानी की धारा। यानी कानों में भगवान की कथा रूपी धार छोड़ी जाय कि संशय रूपी सर्प निकल जाय। क्योंकि

संशय सर्प ग्रसेहु मोहि ताता।

जैसे बिल में पानी डालने से सर्प बाहर निकल आता है वैसे ही कानों में भगवान की कथा रूपी धारा डालने से संशय रूपी सर्प जो कान रूपी बिल में निवास करता है बाहर निकल आता है। कौन सा पानी छोड़ना चाहिए।

राम भगति जहँ सुरसरि धारा।
सरस्वती ब्रह्म विचार प्रसारा॥

विधि निषेधमय कलिमल हरनी ।
करम कथा रविनन्दनि बरनी ।।

यही कर्म भक्ति और ज्ञान रूपी पानी की धारा कानों में छोड़ना चाहिए।

भगवान की भक्ति गंगा है, ज्ञान सरस्वती है। ऐसा करो, ऐसा न करो का निर्देश जमुना देती है। इन तीनों नदियों का पानी डालना है।

संशय निकल जाने पर अन्तः करण निर्मल हो जाता है। अन्तः करण शुद्ध न हो लेकिन बाहर कितना भी सुन्दर शरीर हो तो कोई लाभ नहीं अर्थात बाहर की पैकिंग अच्छी हो अन्दर वस्तु खराब हो तो पैकिंग किस काम की।

सूर्पनखा देखने में अति सुन्दरी थी लेकिन अन्दर कालिमा भरी थी। भगवान राम को जाकर कहती क्या है?

तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी।
यह संजोग विधि रचा बिचारी ।।

तुम्हारा हमारा संयोग ब्रह्मा ने मिलाया है।

मम अनुरूप पुरुष जग माहीं।
देखेउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीं ।।
तातें अब लगि रहिउँ कुमारी।
मनु माना कछु तुम्हहि निहारी।।

प्रभु ने सोचा कि इनका ऐसा कहना बन्द कर दें इसलिए उसकी नाक काट कटवा कर कुरूप कर दिया।

कहने का तात्पर्य है कि भगवान ने सर्व भूतों के हित के लिए कार्य किया। यदि सब सुखी होंगे तो हम कैसे दुःखी रह सकते हैं। किसी कवि ने कहा है :

खुदा अपने दीवानों की खुद बखुद करता है निगरानी।
नया बिस्तर नया मंजिल नया दाना नया पानी।।

एक वैद्य ने हमको बताया कि हमारे लिए मोती पिष्टी का प्रयोग बीमारी के लिए हितकारी होगा। उस दिन कोई भक्त दान पात्र में मोती चढ़ा गया। यह इसका प्रयोग है कि सब भूतों की हित में वे अनवरत रत हैं।

जेहि विध सुखी होइ सब लोगा।
करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा।।

इसीलिए तो कहा है।

सब तरु फले राम हित लागी।

राम वन गये तो वन के जितने पेड़ थे राम के लिए उनमें सबमें अपने आप फल लग गये।

लेकिन आजकल लोग चाहते हैं हम सुखी हों, हमारी स्त्री एवं बच्चे सुखी हो जायँ, हमारी दोनों आँखे बरकरार रहें, हमारा परलोक पवित्र हो जाय। तो भाई यह तो स्वहित की बात हो गई, परहित की बात नहीं हुई।

ब्रह्मलीन स्वामी जी कहा करते थे, बिगड़ा तो व्यवहार है, परमार्थ कुछ नहीं बिगड़ा। इसलिए व्यवहार सुधारना है।

दो दल थे। प्रत्येक दल में दश-दश व्यक्ति थे। दोनों के मुखियों ने आशुतोष भगवान की अराधना की। अवढर दानी

भगवान ने खुश होकर दोनों को वरदान माँगने के लिए कहा। एक मुखिया ने माँगा कि हमारे पास जो सुख है वह हमारे दल के ९ व्यक्तियों में बाँट दो। दूसरे मुखिया ने कहा कि हमारे दल के ९ व्यक्तियों के पास जो सुख है वह हमको दे दो।

इसमें वास्तव में कौन सुखी होगा ? वह मुखिया सुखी नहीं हो सकता है जिसकी भावना दूसरों का सुख छीन कर स्वयं सुखी होने को था, जबकि दल के ९ व्यक्ति दुःखी होंगे तो मुखिया कैसे सुखी रह सकता है ?

इसके विपरीत दूसरा मुखिया दल के सब लोगों को सुखी देखना चाहता था तो सब मिलकर मुखिया को दुःखी नहीं रहने देंगे। दूसरा मुखिया सबमें ईश्वर को देखता था।

सीय राम मय सब जग जानी।

जैसे जेवर सोना मय, घड़ा मिट्टी मय है वैसे जगत सीयराम मय का भाव है।

प्रयाग, माघ मेला कैम्प, २८-१-७३

करहुं सदा तिनकी रखवारी

हमारे पास से यदि एक रुपया गिर जाय तो रोटी खाने में मन नहीं लगेगा। माला फेरते समय यदि पता लग जाय कि ५ रुपये का नोट गिर गया है तो माला फेरने में मन नहीं लगेगा। हम ५) रुपये के बराबर भी भगवान को महत्व नहीं देते। विश्वामित्र दशरथ से कहते हैं कि राम को दे दो। दशरथ कहते हैं—

माँगहु भूमि धेनु धन कोसा।
सर्वस देउं आजु सहरोसा॥

१. माँगहु भूमि (सब भूमि माँग लेओ)

२. धेनु (गंगासिंह राजा ने जब लड़की की शादी की थी तो १० हजार गाएं दी थी। अब २० हजार की साड़ी देते हैं)

३. धन कोसा (सब धन ले जाओ)

यह सब मैं आज बड़ी खुशी से दें दूंगा।

देह प्रान ते प्रिय कछु नाहीं,
सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं॥

लेकिन यहाँ ५) रुपये गिर गए तो दिन भर रोये। ५ माला फेरते थे, नहीं फेरी तो उदासी नहीं आई लेकिन ५) रुपये खो जाने पर उदासी छा गई।

यह देह कितनी प्यारी है, इसको भी मैं एक निमिष में दे दूंगा लेकिन राम को छोड़ दो।

महाभारत के युद्ध में दुर्योधन एवं अर्जुन दोनों कृष्ण के पास जाते हैं। अर्जुन पैरों की तरफ खड़े होतें हैं। दुर्योधन सिर की तरफ खड़ा होता है। भगवान के नेत्र खुले। पहली निगाह अर्जुन की तरफ गई। सिर की तरफ जो खड़ा होंता है उसको टेढ़ी नजर से देखा जा सकता है। भगवान की नजर जिसके प्रति टेढ़ो हो गई तो उसका क्या हाल होगा ?

भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।
धूरि मेरु सम जनक जम ताहि ब्याल सम दाम ॥

बालकाण्ड/१७५

भगवान ने कहा, हमारे लिये पाण्डव कौरव दोनों समान हैं। एक तरफ नारायणी सेना है, दूसरी तरफ मैं नारायण हूँ जो कि अस्त्र न छूने का प्रण किए हूँ। जिसको जो आवश्यकता हो माँग लो। अंधे के लड़के दुर्योधन ने सोचा बिना अस्त्र के कृष्ण को लेने से क्या फायदा ? यह नहीं समझा जो कुछ नही करता वही सब कुछ करता है। जो सब कुछ करता है वह कुछ नहीं करता।

सूर्य उदय होने पर सूर्य किसी से नहीं कहता कि सबेरा हो गया है, काम करो। सब अपने आप काम पर लग जातें हैं। इसी तरह चेतनमय की चेतनता से सब संसार कार्य करता है।

अर्जुन ने कहा कि जो बचा है वह हो बचा सकता है। आप बचे हैं हमको तो आप की ही आवश्यकता है।

राम मरे तो हम मरे नहीं तो मरे बलाय।
अविनाशी की गोद में मरा न मारा जाय।

जो भगवान की शरण में रहता है उसके लिये भगवान कहते हैं।

अस सज्जन मम उर बस कैसे।
लोभी हृदय बसै धन जैसे ॥

दीन बन्धु की नीयत को देखो। भगवान खुद संकट में पड़कर भी उनकी शरण में जाने वाले को बचाते हैं।

करहुँ सदा तिनकी रखवारी।

भगवान इसलिये अर्जुन के साथी बने, क्योंकि कोई आंच आवे तो भगवान पर आ जाय। उनके शरण आये अर्जुन पर न आ जाय।

परशुराम आये तो राम ने समाज को बचाने के लिये सामने आकर कहा कि मैंने धनुष तोड़ा है।

भाई, भगवान को मुख्य समझो, एवं माया को गौण समझो।

परमार्थ अंक, १५-४-७२

भक्त के अभिमान का नाश भगवान करते हैं

जिस पुस्तक में भगवान राम का घर हो उसका नाम रामायण। जिसमें राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न की बात हो उसका नाम चौपाई। जिसमें चारों वेदों की बात हो वह चौपाई। उस चौपाई में से छानकर रखा गया वह दोहा, सोरठा, छन्द हुये।

एक सज्जन ने कहा कि रामायण पढ़ा करो। कुछ दिनों बाद मिले तो उन्होंने बताया कि रामायण पढ़ा जरूर, लेकिन कुछ जची नहीं, कारण राम की स्त्री का हरण हुआ। राम ऐसे रोये कि शीशम के पेड़ों से, कबूतरों से, हिरणों से पूछने लगे कि सीता कहाँ है। रो रहे थे। सांसारिक मनुष्यों की तरह एक स्त्री मरने पर रो रहे थे। हमारी तो तीन स्त्रियाँ मर गईं लेकिन हम तो राये नहीं। अब बताइये कि राम अच्छे कि हम अच्छे?

एक दो पैसे के बाजीगर की करामात को कोई नहीं समझ सकता तो उस परम बाजीगर के बाजीगरी का तमाशा कौन समझ सकता है? साक्षात गरुड़ जी, पार्वती जी भी चक्कर में पड़ गये, तो तुम्हारी कौन हस्ती है?

बाजीगर के साथ जो जमुड़ा (लड़का) होता है वह बाजीगर के प्रत्येक रहस्य को जानता है। इसी तरह जिनको भगवान पर विश्वास है उनको मालूम है कि भगवान सीता के लिए क्यों रोये? यदि मान लिया जाय कि भगवान राम महारानी सीता में आसक्त थे तो जब गर्भवती सीता को उन्होंने बाल्मीकि के आश्रम में भेज दिया तो क्यों नहीं रोये?

भगवान राम जब बन में आये तो सन्यासियों ने सोचा बड़ा अच्छा हुआ। उन्होंने अपने पसन्द के पत्थर को गढ़कर स्त्री रूप दिया और सोचा जिस पत्थर पर भगवान राम पैर लगा देंगे वह पत्थर स्त्री हो जायेगी और हमें रोटी नहीं बनानी पड़ेगी। सबके भीतर यह कामना उत्पन्न हुई। भगवान ने विचार किया कि सन्यासियों के मन में स्त्री की कामना नहीं होनी चाहिये यदि कामना हो जाय दो उस सन्यासी के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहिये। मैंने मर्यादा की रक्षा करने के लिए अवतार लिया है, तो मेरे आगमन से मर्यादा का नाश नहीं होना चाहिये। भगवान ने ऐसा ही किया।

नारद जी ने भगवान विष्णु के पास जाकर कहा मैंने कामदेव को जीत लिया है। दूसरे ही क्षण कहने लगते हैं, किस तरह बाला मिल जाय। भगवान ने नारद को बन्दर का स्वरूप दे दिया' लेकिन सिर्फ उस लड़की ने एवं शिव के दोनों गणों ने यह रूप देखा। और किसी ने नारद का बन्दर का रूप नहीं देखा, हमारे भक्त की गलतियाँ दूर हो जाय, लेकिन समाज में इसकी बदनामी न हो। रामायण सिखाती है कि यदि हम सन्यासी हैं तो हमारे मन में स्त्री की कामना नहीं होनी चाहिये। हम गृहस्थ हैं तो दूसरी स्त्री की तरफ हमारी दृष्टि नहीं जानी चाहिये।

भगवान ने उन सन्यासियों के मन से स्त्री की कामना ही दूर कर दी।

परमार्थ अंक, १५-३-२०

राम अतर्क बुद्धि मन बानी

जो कोई संसार में अच्छा सिनेमा देखना चाहते हैं, उसको क्या उपाय करना चाहिये। कहीं तो दोष देतें हैं भगवान को कि गोमती की बाढ़ ने लखनऊ और जौनपुर में कितनी हानि कर दी। यह संसार ही सिनेमा है। यदि इस सिनेमा को अच्छी तरह देखना चाहते हो, एवं इन सब विपत्तियों को संसार रूपी सिनेमा में यदि नहीं देखना चाहते तो संत्सग करो, शास्त्र का अध्ययन करो। आप भगवान को दोष लगाते हैं, यह गलत है। जिन्होंने शास्त्र नहीं पढ़ा, सत्संग नहीं किया, विज्ञान नहीं जाना वे ही यह बात कहेंगे।

एक मियाँ ने तरबूज की बेल को देखकर कहा कि अल्लाह कितने बेसमझ हैं कि छोटी सी बेल में इतना बड़ा तरबूज लगा दिया। आगे बड़ा सा बरगद का पेड़ देखा जिसमें छोटा बड़ का फल लगा था। उसको देखकर कहा कि अल्लाह ने दूसरी मूर्खता यह की कि इतने बड़े बेड़ में इतने छोटे फल लगा दिए हैं। शीतल हवा लगी, पेड़ के नीचे मियां सो गया। सोने पर एक फल सर पर पड़ा तो कहने लगे कि अल्लाह मिया बड़े अच्छे हैं कि इतना छोटा फल इस बड़े पेड़ में लगाया, कहीं तरबूज जैसा फल लगा होता तो आज मैं मर ही गया होता।

जिस समय जीव पर आफत आती है तो उस समय भगवान की याद आती है।

एक पंजाब के कवि ने लिखा है :—

ढूंढ़ता ढूंढ़ता खुद खो गया।
जिसको ढूंढ़ता था वह ही हो गया।
सब जगह ढूंढ़ा पाया पता तेरा नहीं,
जब पता तेरा लगा तो फिर पता मेरा नहीं॥

भगवान शंकर ने कहा है।

राम अतर्क बुद्धि मन बानो।
मति हमारि अस सुनहुं भवानी॥

राम अतर्क है, राम की लीला अतर्क है। एक आदमी का तहसीलदार के यहाँ मुकदमा चला। उसमें हारने वाला वकील के पास गया। वकील ने डिप्टी साहब के यहाँ मुकदमा करने को कहा। इस मुकदमें में तो वह जीत गया। इस बार हारने वाला वकील के पास गया। फिर मुकदमा चला। इस बार दूसरा जीत गया। अदला बदला चलता रहा। आखिर में सुप्रीमकोर्ट में हारने वाला वकील के पास जाता है। वकील कहता है कि अपील करने की गुंजाइश तो है, लेकिन सुप्रीमकोर्ट के आगे कोर्ट ही नहीं है तो क्या उपाय ?

अन्तिम कोर्ट सुप्रीम कोर्ट है वह है बुद्धि। बुद्धि तक तो भगवान को नहीं जाना जा सकता। मिंया की नाक पर जब बड़ का फल गिरा तब मिंया की बुद्धि ने कहा कि अल्लाह ने बड़े पेड़ में छोटा फल लगाकर ठीक किया है।

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

एक कवि ने कहा है—

सज्जनों के लिये तुम सदा साध्य हो।
दुर्जनों के लिये तुम दुराराध्य हो।
कोई कहता है कि तुम निराकार हो।
कोई कहता है कि तुम साकार हो।
न तुम निराकार हो न साकार हो।
भक्त की भावना में तदाकार हो।

चूहे से पूछो कि बिल्ली का मुँह कैसा है ? चूहा कहेगा कि भगवान करे कि उसका मुँह ही न दिखावे। बिल्ली के बच्चे से पूछो कि बिल्ली का मुँह देखा है तो बिल्ली का बच्चा कहता है कि मैं तो म्याऊँ म्याऊँ करुँगा, किसी को गरज हो तो अपने आप आकर ले जाय। बिल्ली का बच्चा म्याऊँ ही पढ़ेगा, क ख ग घ नहीं पढ़ेगा।

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा।
भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा॥
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी।
जिमि बालक राखइ महतारी॥
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई।
तहं राखई जननी अरगाई॥
प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता।
प्रीति करइ नहिं पाछिलि बाता॥

मोरे प्रौढ़ तनय सम ग्यानी ।
बालक सुत सम दास अमानी ॥
जनहि मोर बल निज बल ताही ।
दुहु कहँ काम क्रोध रिपु आही ॥
यह बिचारि पंडित मोहि भजहीं ।
पाएहुँ ग्यान भगति नहिं तजहीं ॥

बगुला सफेद होता है, हंस भी सफेद होता है। जिसकी चोंच से दूध पानी अलग अलग हो जाय वह हंस है। जिसकी बुद्धि रूपी चोंच सार असार अलग अलग कर दे वह पंडित है।

· सुनार की दुकान की राख को न्यारीया मोल लेता है। वह राख की मोल करता है, राख के लिये नहीं लेकिन, न दिखने वाले सोने के लिये। सोना निकाल लिए जाने के बाद राख की क्या कीमत है ? कुछ भी नहीं शरीर से जीवात्मा निकल जाय तो शरीर की क्या कीमत ? संसार में दिखाई देने वाले की कीमत नहीं है, लेकिन दिखाई-देने-वाले-पदार्थ में नहीं-दिखाई-देने-वाले पदार्थ की कीमत है।

न्यारिया सूनार के दुकान की राख मोल करकर ले जाता है लेकिन हलवाई के दुकान की राख नहीं लेता।

प्रयाग स्टेशन-सम्मेलन, ९-१-६१

भोगों से दुःख की प्राप्ति

कई लाख वर्ष पहले लड़ाई हुई। उसमें सब संसार सुखी हुआ। यह कैसे ? लड़ाई में तो दुःखी होना चाहिये। उसमें तो धन समाज, जन सब का नाश होता है। एक लड़ाई में जनता सुखी हो जाती है एवं दूसरी लड़ाई में दुःखी हो जाती है। जिस लड़ाई में जनता सुखी हो जाय, वही लड़ाई अच्छी कही जायेगी। आज के ४० वर्ष पहले इतने वैद्य, वकील नहीं थे, जितने अब हैं। जितने वैद्य वकील ज्यादा होंगे उतने ही रोग मुकदमें ज्यादा होंगे।

सब सुन्दर सब बिरुज शरीरा।
अल्पमृत्यु नहिं कवनिहु पीड़ा।।

रामराज्य में अल्प मृत्यु नहीं होती थी। एक बार एक लड़का अपने पिता के सामने मर गया। उस लड़के के पिता ने राम के सामने शव को ले जाकर रख दिया और कहा कि तुम्हारे रहते मेरा लड़का क्यों मरा ? लड़का मरा, दोष हुआ राजा का।

ये सत्संग सम्मेलन होते हैं, इसमें कुछ सीख कर जाओ। एक व्यक्ति सत्संग में जाने लगे तो उनके लड़के ने पिता से कहा, हम भी कथा सुनने चलेंगे। पिता ने कहा, हम तो जाते ही हैं तुम चलकर क्या करोगे ? लड़के को मना करने की इस बातचीत से पिता को सत्संग में जाने को कुछ देर हो गई। पिता जी सत्संग में पहुँचे तो महात्मा ने पूछा—आज आने में देर क्यों हुई ? तब

उन्होंने अपने लड़के से हुई बात को बताया। महात्मा जी ने कहा लड़के को ले आते। पिता ने कहा हम उसको लाते तो आपकी बात का असर उस पर पड़ जाता। आप कहेंगे सत्य बोलो, सत्य व्यवहार करो, मिलावट न करो, चोरी न करो। और बिना झूठ बोले और चोरी किए, व्यापार चलता नहीं। हम पर आपका कोई असर नहीं होता है, क्योंकि मेरा हृदय पक्की सीमेन्ट की सड़क की तरह है। जैसे सीमेन्ट की सड़क पर पानी बरसता है और बह जाता है, उस पर कोई असर नहीं होता, इसी प्रकार आप के उपदेश का मेरे हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लड़के का हृदय कोमल है, आप के उपदेशों का उस पर यदि प्रभाव पड़ गया तो मेरा कारोबार चौपट हो जायगा। मित्रों ऐसा सत्संग न करो। यहाँ से कुछ अच्छी बातें सीखकर जाओ और उन पर अमल करो।

राम ने कहा—लड़के ने कोई अपराध किया होगा, इसलिये मर गया होगा।

पिता ने कहा—मेरा लड़का दिन में नहीं सोया, रात्रि में दही नहीं खाया, कभी रजस्वला स्त्री से भोग नहीं किया, तो अपराध क्या किया ?

अमेरिका में आज दुःख क्यों है ? क्योंकि भोगों का प्राबल्य बढ़ता चला जा रहा है। गर्भधारण के बाद भी ब्रह्मचर्य नहीं रहता इसके कारण जो सन्तान होती है, वह भोग की तरफ जाती है। भोगों में प्रतिस्पर्धा होती है। तुम्हारे पास २५) हजार की मोटर है तो ३० हजार की मोटर लेंगे, चाहे काला बाजार ही करना पड़े।

पहले किस बात की लड़ाई थी ? तुम महलों में रहो लेकिन भरत ने कहा हम तो कुटिया में ही रहेंगे।

रावण ने कहा—हम काहू के मरहिं न मारे। हमारे ललाट में विधि ने नर के हाथ से मरना लिखा है, जो कि असम्भव है। जो दूसरों को मारकर रहना चाहता है वह रावण की पार्टी का है। जो दूसरों को जिन्दा रखना चाहता है वह राम की पार्टी का है।

आजकल एक दूसरे को मिटाना चाहते हैं।

राम ने धनुष तोड़ा, बाद में परशुराम आते हैं।

परशुराम ने कहा—

सुनहु राम जेहि सिव धनु तोरा।
सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा।
न त मारे जैहहिं सब राजा॥

आजकल के राम होते तो मोटर पर घर चले जाते, और कहते कि मर जाने दो सब राजाओं को। लेकिन राम ने कहा—

नाथ संभु धनु भंजनि हारा।
होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥

किस ढंग से राम ने समाज को बचाया।

राम कहते हैं,

मर्कटहीन करहुँ महि

जो समाज को मिटाने को तैयार है, वह स्वयं नष्ट होता है।

जो दूसरों के लिए कुआँ खोदेगा उसको स्वयं कुयें में डूबना होता है।

एक भक्त ने बहुत भजन किया। शिव जी प्रसन्न हो गये और बरदान माँगने को कहा, शर्त यह थी कि जितना माँगोगे उससे दुगना पड़ोसी को मिलेगा। तो उसने माँगा कि हमारी एक आँख फूट जाय। लक्ष्य था कि इससे पड़ोसी की दोंनों आँख फूट जायेंगी।

संसार में सब लोग यही चाहते हैं कि, सारा सुख बटोरकर उन्हीं के पास आ जाय।

दूसरों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न हम करेंगे तो वह हानि हमारी होगी।

प्रयाग स्टेशन सम्मेलन, ८-१-६१

सत्संग-सुमन

(१)

आप जहाँ बैठे हैं उस स्थान की मिट्टी हटाई जाय तो उसके नीचे पानी निकलेगा। मिट्टी के हटाने से पानी ही नहीं, लोहा, तांबा, सोना, हीरा, जवाहरात, अभ्रक आदि असंख्य वस्तुएं मिलेंगी। इन सब की खदानें मिट्टी के नीचे हैं। मिट्टी का शोध किया जाता है, उस शोध से पता लगता है। तब वहाँ खुदाई की जाती है।

लखनऊ में एक सरकारी अफसर हमारे भक्त हैं, उनके यहाँ सैकड़ों लिफाफों में तरह तरह की मिट्टियाँ रखी हुई थीं। उन्होंने बताया कि इन मिट्टियों के शोध से पता लगता है कि कहाँ कौन सी धातु या पदार्थ है एवं तत्पश्चात् उस जगह की मिट्टी खोद कर तरह-तरह की खदानें निकाली जाती हैं।

हाल ही में यू० पी० में मिर्जापुर की तरफ कोयले की खदानें मिली हैं। कहते हैं झरिया, धनवाद की तरफ जो खदाने हैं उनका कोयला २०० वर्षों में समाप्त हो जायगा। इस तरह अन्य खदानों में जहाँ अन्य धातु या कोयला या अभ्रक कभी न कभी समाप्त होगी।

लेकिन यदि मनुष्य रूपी मिट्टी हटा दी जाए तो उसके अन्दर अनन्त आनन्द राशि मिलेगी। वह आनन्द कभी समाप्त होने वाला नहीं। उसकी समाप्ति की कोई अवधि नहीं है।

परमार्थ निकेतन, १८-६-७२

(२)

तराजू के एक पलड़े में प्राण और दूसरे में आँख रखी हो तो दोनों में से कौन सी वस्तु पसन्द की जायगी, सब लोग प्राण रखना पसन्द करेंगे। स्वामी शरणानन्दजी की आंखे नहीं हैं, लेकिन आंखे न होते हुये भी उनके यहां आने पर सब लोग उनको प्रणाम करेंगे। जब आंखों से प्राण की आवश्यकता ज्यादा समझते हो तो रूप के पीछे क्यों भागते हो ? सारा संसार आंख एवं कान के बदले प्राण चाहेंगे।

लड़का डूब रहा हो एवं तुम्हें तैरना नहीं आता हो तो क्या तुम उसको बचाने तालाब में कूदोगे ? नहीं। इससे समझ लो लड़का प्यारा है कि शरीर प्यारा ? शरीर में भी आँख प्यारी है या प्राण प्यारा ?

मुनि विश्वामित्र द्वारा राम के माँगे जाने पर दशरथ ने कहा—

माँगहु भूमि धेनु धन कोसा।
सर्बस देउं आजु सह रोसा॥
देह प्रान ते प्रिय कछु नाँही।
सोउ मुनि देउं निमिष एक माहीं॥

क्योंकि राम प्राण के भी प्राण हैं, इसलिए राम देते नहीं बनता है।

सर में सूई चुबोने से दर्द होता है, लेकिन बाल काटने से दर्द नहीं होता। यह भगवान की सामर्थ्य है जिनके कारण जड़ से चेतन होता है, एवं चेतन से जड़।

जो चेतन कह जड़करहि जड़हि करइ चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनाथही भजहिं जीव ते धन्य ।।

सिनेमा के जड़ पर्दे पर चेतन जगत् दिखाई देता है, लेकिन उस मशीन को चलाने वाला दूसरा ही होता है। इस तरह संसार में जड़ चेतन दृश्य को दिखाने वाला परमात्मा है।

परमार्थ निकेतन, १९-६-७२

(३)

दाता की सम्पति रहे आठो पहर हुजूर ।
जैसे गारा राजको भरि भरि देत मजूर ।।

राज यदि गारा को खर्च नहीं करे तो मजदूर फिर क्यों गारा देगा।

ब्रह्मलीन महाराज कहा करते थे कि आलू यदि डलिया में सड़ जाएगा तो फेंक दिया जाएगा लेकिन जमीन में सड़ने पर फेंका नहीं जाएगा।

जहाँ में जब तू आया था सभी हंसते थे तू रोता था,
बसर कर जिंदगी ऐसी सभी रोंये तू हँसता जा।

किसी राज्य में राजा एक साल ही रखा जाता था बाद में उसे उस पार जंगल में पहुँचा दिया जाता था जहाँ उसे शेर भेड़िये खा जाते थे। सैकड़ों राजा इस तरह आए और प्राण देकर चले गए। उस राज्य का नियम था पहले राजा के वन भेज दिए जाने पर दूसरा व्यक्ति राज सिंहासन पर बैठाया जाता था। उस दिन प्रातःकाल जो भी व्यक्ति सबसे पहले राजद्वार में प्रवेश करते पाया जाता था उसी को राजगद्दी पर बैठा दिया जाता था।

एक बार ऐसे ही एक महात्मा को लाकर राजा बनाया गया। और उनको राज्य का नियम बताया गया कि एक साल तक आपको पूरा अधिकार है चाहे जैसा करें। तो महात्मा ने कहा कि उस पार जंगल में आग लगाकर पूरा नगर बसा दिया जाय, सब तरह सम्पन्न बना दिया जाय। इस तरह इस पार एवं उस पार उन्होंने एक जैसा बना दिया। अब एक वर्ष बाद महात्मा राजा को राज्य से हटाए जाने के बाद यदि उस पार जंगल में भेज भी दिया जाय तो कोई डर नहीं रहा। इस सम्बन्ध में एक कवि ने जो लिखा है वह नीचे दोहराया जा रहा है।

राज्य के प्रधान मंत्री उस महात्मा से कहते हैं :—

राज सिंहासन पर आसन बिछा के
तिलक सजाके तुमको राजा बनाएँगे।
वैभव विलास धनधान्य के भंडार जिते
चाहे जिते आप निजानन्द में उड़ायेंगे।
रानी दास दासी सब सेवा में तुम्हारे रहे
प्रजा के नारी नर आपके कहाएँगे।
वर्ष के भीतर 'विनीत' वनवास मिले
शेर और चीते शरीर धर खाएँगे।

महात्मा कहते हैं :—

अब कुछ कहना है मुझे सुनो तुम सरदार
एक वर्ष का क्या मुझे है पूरा अधिकार ?

मंत्री—

सुना चुके हैं नियम सब पीछे दोष न दो
वर्ष भीतरे आप जो चाहे सो करो।

महात्मा—

शीघ्र ही कटाकर उस पार का भयंकर बन
कांटे झाड़ झंकड़ो में आग लगवाई जाय।
संगमरमर का महल बनाकर वहाँ
सामने नवीन पुष्प बाटिका लगादी जाय।
जितनी दुकाने यहाँ, पहुँचे उस पार वहाँ
आज बाजार में मुनादी करादी जाय।
बरस के भीतर वहाँ यहाँ से सौगुनी
सम्पत्ति सजा दी जाय।

जब सब काम हो गए तो बाबाजी ने राज्य को छोड़कर उस पार जाने को कहा तो, राज्य के कर्मचारियों ने कहा—

'निकले कब' आप न यह कहिए।
कुछ कष्ट हो तो हमसे कहिए।
इस पार जो था उस पार किया।
मर्जी है आपकी यहाँ चाहे वहाँ रहिए।

जो सब सम्पत्ति, 'मैं' 'मेरा' को भगवान के अर्पित कर देता है, वह यहाँ रहे चाहे वहाँ रहे कोई अन्तर नहीं है।

परमार्थ निकेतन, २०-६-७२

सत्संग-सुमन

(१)

घर में तोता भी रहता है एवं चूहे भी रहते हैं। तोता के मरने पर दुःख होता है, लेकिन चूहे के मरने पर नहीं। कारण तोते में 'मेरा' लगा है। विचार करके देखो, जिसको तुम 'मेरा' कहते हो, क्या वास्तव में वह तुम्हारा है।

जिस मोटर में ब्रेक न लगी हो तो वह गड्ढे में चली जाएगी। इसी तरह शरीर रूपी मोटर में ब्रेक नहीं लगी है तो वह भी गड्ढे में जायेगी।

एक भक्त से पूछा गया—मकान किसका है ? कहा, भगवान का। भगवान किसके हैं ? तो कहा, हमारे हैं। जब भगवान हमारे हैं तो मकान, लड़का, लड़की सब कुछ हमारे ही हुए। सब कुछ भगवान का मान लो तो प्रकारान्तर में तुम्हारा ही रहेगा। यदि संसार को अपना मान लिया तो संसार अपना रहेगा नहीं, छूट जायेगा। इसी तरह भगवान भी छूट जायेंगे।

परमार्थ निकेतन, २०-६-७२

(२)

कुछ वर्ष पहले जब हम गुरु पूर्णिमा के लिए मैनपुरी जाने लगे तो ब्रह्मलीन महाराज जी ने कहा आप जल्दी वापस आ जाना, हमारे शरीर का ठिकाना नहीं है। उस समय हम लोग

दो जने ही थे। उन्होंने कहा, हमें कोई चिन्ता नहीं है लेकिन यह निश्चय जानों यह शरीर एक दिन न तुम्हारा रहेगा न हमारा।

हमने कहा—आपका शरीर बना रहेगा तो ज्यादा अच्छा है, क्योंकि हमारे चलाए सब व्यवस्था नहीं चल सकती।

स्वामी जी ने कहा था—जो कुछ भी तुम्हारे पास या ट्रस्ट के पास शक्ति हो वह विराट भगवान की सेवा में लगा देना। यह सारा संसार विराट भगवान है।

आजकल आश्रम के विद्यार्थियों की दशा अति दयनीय है यह यथार्थ बात है। असफलता भी सफलता का कारण होती है। तकलीफों से घबड़ाना नहीं चाहिये। ट्रस्ट पूरा प्रयत्न कर रहा है कि विद्यालय एवं अस्पताल के रोगियों की आवश्यकता पूरी हो, आप लोगों का सहयोग है ही।

स्वामी जी कहते थे—चन्दा व निन्दा न करना। उनके इस सिद्धान्त का भरसक पालन किया जाता है।

यह आश्रम किसी सम्प्रदाय या मजहब का नहीं है। सब प्रान्त के लोग यहाँ आते हैं।

परमार्थ निकेतन, २१-६-७२

(३)

रामायण को पढ़ते तो अनेक हैं लेकिन उसका मर्म सबके समझ में ठीक नहीं आता।

पार्वती जी ने कहा राम राजा के लड़के हैं, वे ब्रह्म कैसे हुए? स्त्री के लिए विलाप करते हुये जंगल में पेड़ से, पक्षियों से पूछते फिर रहे हैं।

एक ब्राह्मण के लड़के को हमने कहा, रामायण पढ़ो। बाद में मिले तो पूछा कि क्या पढ़ा था। तो कहा कि रामायण जची नहीं, स्त्री के पीछे राम रोने लगे। हमारी तो तीन-तीन स्त्रियाँ मर गईं हम तो कभी नहीं रोये। राम से तो हमही बड़े ठहरे।

तो उन्होंने रामायण ठीक से पढ़ा ही नहीं।

राम के चरित्र का पूरा पता तब लगता है जब कई शास्त्रों का अध्ययन किया जाय। केवल रामायण से ही पता नहीं लगता।

जो निर्गुण का ध्यान करने वाले सगुण का खण्डन करते हैं वे ब्रह्म तत्व को नहीं जानते।

जिस तरह एक दुकान पर सब चीजें बिकती हैं, उसी तरह रामायण भी जनरल मर्चेन्ट की दुकान है।

तुलसीदास जी ने जहाँ-जहाँ निर्गुण की व्याख्या की है वहाँ वहाँ सगुण की व्याख्या भी की है।

जो सगुण का समर्थन करते हैं निर्गुण का खण्डन करते हैं वे भी ब्रह्म तत्व को नहीं जानते।

नासिका साकार है लेकिन सुगन्ध निराकार है। शरीर साकार है लेकिन शक्ति निराकार है। कलाकन्द साकार है, उसमें मिठास निराकार है।

भगवान साकार भी हैं एवं निराकार भी।

परमार्थ निकेतन, २१-६-७२

दूसरे के मन को करो

१ के सामने १ आने पर ११ हो जाता है। दश गुनी शक्ति बढ़ जाती है। १ और हो जाय तो १११ हो जाता है। मालूम होता है एक में बड़ी शक्ति है।

गंगा एक थीं। जहाँ से निकली उसमें बड़ी शक्ति थी। बड़े-बड़े पहाड़ों को गिराया। लेकिन जब अनेक धाराएँ हो गयीं तो वह शक्ति नहीं रही। संसार में एक धार में यदि बहकर चले तो हमें कोई संकट नहीं। अनेक होने पर संकट होता है। तास के दहले पर गुलाम डाल दिया जाय तो दहला हार जाता है। गुलाम पर मेम पड़ने पर गुलाम हारता है। मेम पर बादशाह पड़ने पर मेम हारती है। लेकिन बादशाह पर एक्का डालने पर एक्का जीतता है।

सुई सुहाग साधु जन बिछुड़े देत मिलाय।
आरा कुल्हाड़ा दुष्टजन साथ सावित देत छुड़ाय॥

कैंची कपड़े के थान का पचासों टुकड़ा बना देती है। कुल्हाड़ा लकड़ी के टुकड़े अनेक कर देता है। सुई कैंची से बने अनेक टुकड़ों को एक करती है। सुहागा अनेक सोने के टुकड़ों को एक बना देता है। कैंची ने एक को अनेक बनाया, सूई ने अनेक को एक बनाया। परिणाम यह है कि सूई दर्जी को टोपी में लगी रहती है, कैंची पैरों में रहती है।

यदि आपका हमारा मन मिला हो तो हम कोसों दूर रहकर भी एक हैं। मन नहीं मिला तो पास रहकर भी अनेक हैं। मन मिलने से मेल होता है सिर्फ शरीर पास रहने से मेल नहीं होता। लंका में भगवान ने रावण को मारा। सीता को रावण ने हर लिया लेकिन पास रहते हुये भी मेल नहीं हुआ। भरत राम से दूर रहे, लेकिन दोनों का मन मिला हुआ था।

आप अपने घर में पचास हजार रुपया रख सकते हैं लेकिन दो सेर अफीम नहीं रख सकते। ठेका लेकर रख सकते हो। रावण ने बिना ठेके के सीता को रखा था।

इसलिये माया रूपी अफीम को भगवान से ठेका लेकर रखो।

राम ने कहा—

चौदह वर्ष की अवधि बीतने पर यदि मैं जाऊँगा तो भरत को जिंदा नहीं पाऊँगा।

भरत ने कहा है :—

बीते अवधि रहे जो प्राणा।
अधम कवन जग मोहि समाना॥

दोनों दूर दूर हैं, लेकिन मन मिला हुआ है। यह हृदय रूपी रेडियो से बात हो रही है। इनमें इतना प्रेम क्यों? लड़का कहता है पिता दुःख देता है। पिता कहता है लड़का दुख देता है, इत्यादि इत्यादि। एक दूसरे के मन की बात नहीं करते इसलिए दुःख होता है। चाहते हैं सब यही कि हमारे मन की सब करें। ऐसा होने से प्रेम नहीं होता। राम कहते हैं, जो भरत कहे वही

हम करें। पिता जिसको जो चीज देता है लड़का वही लेता है। हमको बन का राजा बनाया, भरत को अयोध्या का राजा बनाया। हम बड़े थे हमको बड़ा राज्य दिया (यानि बनका) छोटे को छोटा राज्य दिया। मुझे बन में भेजा बनने के लिये, बिगड़ने के लिए नहीं पिता जी ने जिसको जो दिया वही लिया।

मैं जानू निज नाथ सुभाऊ।
अपराधीहुँ पर क्रोध न काऊ।
मोपर करहिं सनेह बिसेषी।
खेलत खुनस न कबहुँ देखी।

कभी भी मेरे मन को भंग नहीं किया।

आजकल कहते हैं—कोई अन्याय नहीं सहन होता, जैसे वही न्यायाधीश हैं। आजकल किसी को उड़द की दाल अच्छी लगती है, तो किसी को अरहड़ की दाल अच्छी लगती है। जिस माता को अरहड़ की दाल अच्छी लगती है, वह यदि उड़द की दाल बनाए तो उड़द की दाल जिस माता को प्रिय लगती है उसका मन मिलेगा और तुम्हारी भी अरहड़ की दाल से आसक्ति हट जायगी।

राम ने कहा—तुमको पिता जी नें अयोध्या का राजा बनाया तुम अयोध्या का राज्य करो, मैं बन का राज्य करूँगा।

भरत जी ने कहा—मैं खेल में हारा था तो आपने मुझे उसमें भी जिताया। मैं जब जब हारा आपनें मुझे जिताया।

आज सब अपने अपने मन की चाहते हैं। भगवान राम के यहाँ अपने मन की नहीं चलती थी, वे दूसरों के मन की करते

थे। सुग्रीव ने कहा विभीषण आया है, निशाचर की माया नहीं जानी जा सकती। हमारा भेद लेने आया है। सुग्रीव के मन के माफिक राम ने कहा—तुमनें बड़ी नीत की बात कही।

सीता जी जब राम के साथ बन गयीं तो यह नहीं कहा कि हम पति के साथ बन में जायँगी बल्कि विनय के साथ सास से प्रार्थना की और बन में जाने के लिये सास की सम्मति ले ली।

पारिवारिक मेल या संगठन तब ही होगा जब एक दूसरे के मन की करेगा।

एक सेठ का लड़का रात्रि में दही खाता था। उसको खाँसी आने लगी। दही खाने के साथ साथ उस लड़के को खाँसी हो गई। रुपया खर्च किया, लेकिन खाँसी ठीक नहीं हुई। सेठ लड़के को महात्मा के पास ले गये। महात्मा ने उसको कहा कि कोई बात नहीं दही खाना बन्द हो जायेगा। ४-५ महीने के बाद महात्मा फिर उस शहर में आये और शहर के बाहर एक पेड़ के नीचे धूनी लगाकर बैठ गये। लोगों ने सेवा के लिए पूछा तो कहा दस सेर दही भेजना या बीस सेर दही भेज देना। उस सेठ के लड़के के पास खबर पहुँची कि यह महात्मा दही के प्रेमी हैं। वह महात्मा के पास गया। महात्मा ने अपना नाम दध्यानन्द बताया और बीस सेर दही की याचना की। लड़के ने कहा—हमारे पिता जी तो दही की निन्दा करते हैं। आप दही की याचना करते हैं।

महात्मा ने कहा—रात्रि में दही खाने से चोरी नहीं होती, आदमी बूढ़ा नहीं होता, पानी में नहीं डूबेगा आदि सब बातें उस

लड़के के मन की बताई। पुत्र पिता को बुला कर लाया। बाद में महात्मा ने पिता पुत्र को उपरोक्त वाक्यों का रहस्य बताया कि दही खाने से ठंड लगेगी, खाँसी आएगी तो खाँसी के शब्द से घर में चोर नहीं आयेगा। ठंड लगने से खाँसी आने से आदमी बीमार रहने लगेगा एवं बूढ़ा होने के पहले ही मर जायगा। इत्यादि अर्थ समझाए। तब पुत्र के ध्यान में आया कि दही रात्रि में खाना नुकसानदेह है और दही खाना छोड़ दिया।

उस महात्मा ने उस लड़के के मन के माफिक कार्य कर उसका मन जीत लिया उसकी रात्रि में दही खानें की आदतें छूट गईं।

चौधरी भवन, प्रयाग, ३१-१-५५